आद निरंजन प्रभ निरंकारा

(सत्संदेश अगस्त क-म्ख से प्रकाशित प्रवचन)

आद निरंजन प्रभ निरंकारा॥
सब में वरते आप निरारा॥

संत महात्मा जब कभी भी आये हैं वह हमेशा एक मालिक के पुजारी रहे। उस का जो कुछ उन्होंने तजरबा किया उस का ज़्यान दुनिया के सामने रखते रहे। इस में शक नहीं कि कहीं कहीं उन्होंने यह ज़्यान किया हम उसी ज़ात के कतरे हैं, I and my father are one (यसुमसीह)

पिता पूत एके रंग लीने॥

मगर उस की हस्ती से इन्कार नहीं। उसी के इज़हार के लिए उन का सारा जीवन बसर होता है। यह श्री गुरु अर्जुन साहब की बाणी है जो आपके सामने आ रही है। इस में फरमाते हैं कि वह प्रभु, वह परमात्मा आदि है। आदि किस को कहते हैं? जब अभी यह सृष्टि बनी नहीं थी, उस से पहले उस वक्त। कि तू हमेशा है, अटल है, लाफानी है परमात्मा का ज़्यान, जब से दुनिया आई उस का लोग बयान करते रहे। ज़्यान कर कर के हार गये मगर वह मज़मून ताज़ा का ताज़ा रहा समझे। यह मज़मून कहो, परमात्मा के बारे में एक लाइंतहा मज़मून है जिस का कोई अंत हुआ, न हो सकता है। जितने महात्मा भी आये उन्होंने इस के मुतल्लिक बहुतेरा कुछ कहा:-

सदियों फिलासफी की चुना-ओ-चुनी रही,
मगर खुदा की बात जहां थी वहीं रही।

As fresh as ever, गुरु नानक साहब ने जप जी साहब में बड़ी खूबसूरती से निर्णय किया है। एक पूरी पौड़ी इस पर दी है, इस में उन लोगों का ज़िक्र है कि उन्होंने उस प्रभु के मुतल्लक ज़्या कुछ कहा है? किस तरह से उस के गुणानुवाद गा रहे हैं। उस में कई दर्जे बनाये हैं। वह जप जी साहब की पौड़ी आप गौर से सुनिए:-

गावे को ताण, होवे किसे ताण॥

कोई तो उस के तान और ज़ोर को ज़्यान कर रहा है और वह भी जितनी किसी की ताकत हो उस की सारी ताकत का अंदाज़ा कोई नहीं लगा सकता। यह है कि वह समर्थ है, वह पूर्ण है, वह सब का main factor कहो, ruling power है, सब के सिर पर ज़बरदस्त ताकत है जिसके कंट्रोल में सब कुछ चल रहा है। गावे को ताण होवे किसे ताण, जितना किसी को तान, बल, बुद्धि दी है मालिक ने उतना उतना उस की ताकत के मुतल्लिक ही ज़्यान करते रहे? गावे को ताण होवे किसे ताण, गावे को दात जाणे निशान। उस की दातें (बज़्शिशें) देख देख कर ज़ई इस का दातार है, इस के लिए भी भई शुक्राना करो, इस के लिए भी भई शुक्राना करो, इस के लिए भी करो। कई महात्मा आकर इसे वाजेह (स्पष्ट) कर के ज़्यान करते रहे। गावे को गुण वडियाइयां आचार। गावे को विद्या बिखम विचार, उस के गुणानुवाद, वह ऐसा है वह मुज़िफ है, वह रहमान है, वह रहीम है, वह दयाल है। ऐसे उस के अनेकों गुणानुवाद हो रहे हैं और वह बयान और उस के आचारों को, conduct उस का व्यवहार कैसा इस दुनिया से है, ज़्या ताल्लुक है। इसके बारे में जिस के मुज़ल्लिक वेद शास्त्र बयान करते हैं उस का ज़िक्र करते रहे। फिर कइयों ने यहां तक कह दिया कि भई परमात्मा का एक ऐसा मज़मून, इतना कठिन है यह ज़्यान में नहीं आ सकता, गावे को विद्या बिखम विचार, कि विचार में आने वाला मज़मून नहीं। यह इस से परे है। फिर आगे ज़्या कहते हैं, गावे को वेखे हाजिरा हजूर, कि हाज़िर हजूर

हर जगह परिपूर्ण, कोई इस तरह गा रहे हैं। कोई ऐसा गा रहा है जो आसमानों पर बैठा दूर से नज़र आ रहा है। फिर आखिर कहते हैं सारे बयान करने वाले कितने ही आये दुनिया में, इस के मुखतलिफ पहलुओं से उस को ज़्यान करते रहे मगर:-

कथना कथी ना आवे तोट॥
कथ कथ कथी कोटि कोट कोट॥

कथना तो करते रहे, कथते रहे उस को मगर उस का कोई अंत नहीं आया और कथ कथ कर के करोड़ों ही जीव आये और बयान करते रहे मगर वह मज़मून ताज़ा का ताज़ा रहा, कभी खत्म नहीं हुआ। आखिर फिर ज़्या कहते हैं ? एते केते कह कह उठ उठ जाए, कि कितने ही आये, कितने ही गुणानुवाद गा गा कर, दुनिया के लोग आये और चले गये। फिर कहते हैं इतने सारे जितने आज दिन तक आये, ऐते केते होर करे तां भी आख न सके केही के, कि जितने आये हैं उतने ही और भी आ जायें, करोड़ों ही उस को बयान करते रहें वह बयान में आने वाली चीज़ नहीं। गुरु नानक साहब ने उस के मुतल्लिक फरमाया, वह मज़मून हमेशा ताज़ा रहा। कोई महात्मा आया उस को गा गा कर चला गया, दूसरा फिर नये सिरे से गाने लगा, नई भट्ठी से, फिर वही राग गाने लग गया, वह मज़मून खत्म होने में नहीं आया। इस बारे में हाफिज़ जब से पूछा गया, हर एक महात्मा ने इस के मुतल्लक राय दी है। अकल से यह मामला हल नहीं हो सकता कि परमात्मा है कि नहीं, ज़्या बुद्धि उस को जान सकती है, ज़्या वह बुद्धि के दायरे में आ सकता है ? हाफिज़ साहब ने फरमाया:-

हदीस मुतरिबो मये गोव राज़े दहर कमतर जो

कहने लगे भई ज़्या कर, या तो साकी का बयान करो, गुरु का जिस ने प्रभु को पाया, उस को तो थोड़ा बहुत ज़्यान करोगे। देखा है न, या जो वह नाम की शराब पिलाता है या उस का ज़िक्र करो। अरे भई यह दुनिया कैसे बनी, कब बनी, किस ने बनाई, कहां पर बनाई, इस झगड़े में मत जाओ। कहते हैं ज़्यों न जाओ:-

कस न कशूद न कशायद ब हिकमत ईं मुअज़्मा रा

कि किसी ने बुद्धि के दायरे में इस मुअज़्मे को हल किया न कर सकता है, यह बुद्धि का मज़मून नहीं। इंद्रियां दमन हो, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो तब उस को पायेंगे न। तो हाफिज़ साहब ने तो कहा। अब उस ज़ात के, उस हकीकत के बारे में जो लाबयान है, जिस को कई तरीकों से महात्मा बयान करते रहे, जिस का निर्णय अभी किया गया गुरु नानक साहब की बाणी के द्वारा, कहते हैं कि वह आखिर उस के मुतल्लक ज़िक्र कर कर के हार गये, वह मज़मून ताज़ा ही रहा।

हम उसी ज़ात के कतरे हैं, जब तक हमारी आत्मा उस में जाकर repose (वासिल)नहीं करती, उस में लय नहीं होती है तब तक शांति कहां है ? सेंट आगस्टन कहता है, Thou O God, has made us unto Thyself and the heart of man is ever restless until it finds rest in Thee किहेमालिक, तूने हम को बनाया है, हमारा दिल तब तक तृप्त नहीं हो सकता जब तक कि हम तुम में वासिल न हो जायें। जो आत्मा परमात्मा से वासिल हो गई वह तृप्त हो गई, उस के मुअज़्मे हल हो गये। वह कौन सी चीज़ है जिस के जानने से सब कुछ जाना हुआ हो जाता है। उस को जान गये जिस के जानने के लिए सब महात्मा आज दिन तक ज़्यान करते रहे, उस सब को जान गये। तो इसी मज़मून को आप देखिए उस परमात्मा को कितने लोग हैं जो याद करते हैं ? याद तो हर कोई करता है न किसी न किसी शज़्ल में।

यह ज़्यान किया गया है कि चार किस्म के लोग उस परमात्मा को याद करते हैं। पहले वे लोग हैं जो भोगों के ज़्वाहिशमंद हैं, महाराज हमें मकान रहने को दो, हमें रोटी खाने को दो, हमें यह दो, हमें वह दो, जो भोगों के ज़्वाहिशमंद हैं। पहला दर्जा जो उस को याद करते हैं और दूसरे लोग वे हैं जो परमार्थी हैं, जिन को परमार्थ की ज़्वाहिश है। तीसरे वे लोग हैं जो ज्ञानी हैं वे हकीकत को पा गये और उन को समझ आने लग गई। चौथे दर्जे के वे लोग हैं जो दुखी होते हैं, पुकार करते हैं। चार

किस्म के लोग हो गये न, एक दुखी, दूसरे भागों के ज़्वाहिश्मांद, तीसरे परमार्थी और चौथे ज्ञानी लोग तो चार किस्म के लोग हैं जो मालिक को याद करते हैं। अब मज़मून को यह दुनिया कैसे बनी, कहां बनी, किस ने बनाई ? यह सवाल कभी हल नहीं हुआ। अंडा पहले था कि मुर्गी, सवाल यह है न। बीज पहले था या दरज़्त। यह माया के अंतर का सवाल है, न हल हुआ न हो सकता है। जब तक आप माया और बुद्धि से परे नहीं जाओगे यह सवाल समझ नहीं आयेगा। तो इस का आला जवाब ज़्या है ? हमारे हजूर थे, उन से यह सवाल किया तो कहने लगे भई ऐसा करो जिस ने यह दुनिया बनाई है न चलो उस के पास, समझे, उसी से पूछें। अब उस के पास कौन पहुंच सकता है ? जिस की मन बुद्धि इंद्रियां स्थिर हो जायें। वहां यह सवाल ही नहीं रहेंगे कि है भी कि नहीं, कहां है, कहां नहीं। तो जब तक बुद्धि स्थिर न हो तब तक हम उस को नहीं पा सकते हैं। परमात्मा के मुतल्लिक ज़्यान किया है कि वह देश, काल, जमाने-मकां कहो, उस से परे है, उन के बंधनों से आज़ाद है, कार्य और कारण के सिलसिले से भी परे है सोचने वाली बात है, cause और effect का भी बैकग्राउंड (आधार) है। Cause बना, effect हुआ। Cause और effect के पसे पुश्त जो आदि चीज़ है वह ज़्या है ? एक ऐसा चक्कर है जिस में से निकलना मुश्किल है समझे। तो सब महात्माओं ने इसी के लिए बयान किया है। हाफ़िज़ साहब ने इसी लिए कहा कि ऐ भाई तू ज़्या कर:-

ऐ दिल ज़बां गुज़र ता जाने जां बबीनी

ऐ दिल तू इस जान से ऊपर आ जा ताकि तेरी जो जान की जान है न, आधार है न, उस को तू देखने वाला बन जाये। जब तक तू अपने आप को एक अलहदा हस्ती मानता है न, उस से ऊपर नहीं आता अपने आप को नाबूद नहीं करता।

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूं।
जब आपा पिर का मिट गया, जित देखां तित तूं॥

जब तक तुम महव न हो, अपने आपे को नहीं भूलोगे, महव नहीं करोगे, उस को नहीं जान सकोगे। तो इस लिए कहा कि भई तू इस जान से गुज़र चल ताकि तू जो जान की जान है उस को देखने के काबिल हो जाये।

बगुज़रार ईं जहां राता आं जहां बे बीनी

इस बाहरी दुनिया से ऊपर आ जा ताकि उस दुनिया के तू देखने के काबिल जो जाये। तो सब महात्माओं ने इस का यत्न किया है खोल खोल कर बयान करने का। गुरु अर्जुन साहब ने सुखमणी साहब में फरमाया:-

आप सज़ा किया सब सज़ा॥

वह मालिक आप सत था, अटल लाफानी था। जो कुछ पैदा किया वह भी अटल चीज़ पैदा की।

आप सत किया सब सज़ा॥
आपे जाणे अपनी गत मिज़ा॥

वह ज़्या है ज़्या नहीं, वह खुद जानता है।

करते की गत न जाणे किया॥

जो बनाने वाला है, जो बनाई हुई चीज़ है उस करते की गति को ज़्या जान सकती है ? बर्तन बन गया, कुज़्हार की हकीकत को ज़्या जान सकता है ? करते की गत न जाणे किया।

नानक जो तिस भावे सोही बस जेया॥

अगर उस को भा जाये, वही कुछ हो रहा है जो उस की रज़ा में है। हम उस के बनाए हुए हैं, बनाए हुए बनाने वाले को जानने के नाकाबिल है। इस लिए अगर परमात्मा के मुतल्लिक हमें कुछ पता चल सकता है तो वह उन लोगों से पता लग

सकता है जिन्होंने इस को अनुभव किया। यह बुद्धि का मज़मून नहीं है। अगर हम इस के मुतल्लिक कुछ जानना चाहते हैं तो अवश्य ऐसे पुरुषों की सोहबत में जाना होगा जिन्होंने इस को अनुभव किया है। उस का नतीजा ज़्या होगा? बाणी ज़्या कहती है?

सुण संतन की साची साखी॥
सो बोलें जो पेखें आखी॥

संतों की शहादत को सुनो, वे कुछ ज़्यान करते हैं जो उन्होंने अपनी आंखों से देखा है। जो देखा है उन्होंने वह दिखा सकते हैं। नानक का पातशाह दिस्से ज़ाहिरा। जो आत्म तत्वदर्शी हैं उन का कलाम है, Behold the Lord. यह क्राईस्ट कहता है देखो सामने। वे देख रहे हैं। उन की वह आंख बन गई है जिस से वह नज़र आता है। जो मन बुद्धि के दायरे में हैं, अंतर की आंख खुली नहीं उन को कैसे नज़र आये? जिन्होंने देखा वे कहते हैं:-

एह संसार जो तू देखदा हर का रूप है
हर रूप नदरी आया॥

भई यह सारा उसी का ज़हूर है। जब वह आंख बन जाये तो वह इसी में हर एक जगह परिपूर्ण नज़र आता है। तो परमात्मा है कहां? हर एक जगह परमात्मा है:-

जल में मीन प्यासी यह देख मोहे आवे हांसी।

मछली की जान, जीवनाधार पानी है। वह पानी में रहती है और पूछती है पानी कहां है?

तू दरियाओ मेरा दाना बीना मैं मछली कैसे अंत लहां॥

कि तू सारी जगह परिपूर्ण है, मैं मछली हो कर तुझ में तैर रही हूं। किन लोगों का यह बयान है? जिन का अंतर का अनुभव खुला, समझे। जिन का नहीं खुला वे इस से दूर बैठे हैं। आसा जी की वार में आप देखेंगे इस बात का निर्णय किया है:-

एह जग सच्चे की है कोठड़ी सच्चे का विच वास॥

यह जगत उस सच्चे की कोठड़ी है और सच ही इस में बसता है। कोई ऐसी जगह नहीं जहां पर वह न हो। जिस तरह रूह, आत्मा जिस्म में एक जाई भी है। आप ने मरते हुए आदमी देखे हैं नहीं, आंखें फिरती हैं। यह यहां (आंखों के पीछे) बस रहा है। यहां से सारे जिस्म को सत्या (ताकत) मिल रही है। तो रूह का ठिकाना यहां (आंखों के पीछे) है मगर वह लूं लूं में रच रही है। ऐसे ही परमात्मा एक जाई भी है और हर जाई (सर्वव्यापक) भी है। यह सारा संसार ही उस का जिस्म है। सब महात्माओं ने इस तरह भी ज़्यान किया है। सवाल तो तरीके बयान का है, समझाने बुझाने का है। कहते हैं भई वह हर एक जगह हाज़िर हजूर है न। वह कभी कहीं और है न आसमानों पर है, न पहाड़ों पर है, न दरियाओं के तटों पर है। वह तो भई हर एक जगह है। सिर्फ आंख में कुव्वते बीनाई चाहिए, आंख देखने वाली चाहिए।

अगर आप की आंख में कुव्वते बीनाई नहीं है तो हज़ार सूरज चढ़ जायें आप के लिए नहीं चढ़े। फिर कहते हैं अगर वह है, हस्ती है, जैसे बयान किया जाता है तो कैसे है? किस किस ठिकाने पर उस का हमें अहसास होने लगता है? कहते हैं जब हम मन बुद्धि से परे चले जायेंगे तब उस का एहसास होने लगेगा। इस अनंत सृष्टि के पीछे एक ला बयान ताकत है जिस को सब महात्माओं ने बयान किया है और उसी के आधार पर यह सब सिलसिला कायेनात (सृष्टि) का चल रहा है, किसी को इस से इन्कार नहीं हो सकता। ज़्या बुद्धि विचार से हम उस को जान सकते हैं? अब मुखतलिफ साईंसदान लोग जो हमारे हैं, सब से बड़ा हथियार साईंस का ही है न, जो चीज़ आज साईंस साबित कर दे, कहते हैं ठीक हैं। अब हम ने यह देखना है कि साईंस ने इस की ज़ात का कुछ पता दिया या लगा सकी है?

हर्बट सपेंसर (Herbert Spencer) अच्छी मानी हुई हस्ती है। वह ज़्या कहते हैं ?

केवल बुद्धि विचार से हकीकत तक रसाई करना जो चाहता है, जो चाहता है कि बुद्धि से उस को किसी तरह समझ सकें मगर वह हकीकत न किसी को मालूम है न मालूम हो सकती है। यह आखिर कह दिया कि वह हकीकत है तो सही, न किसी को मालूम है, न हो सकती है भई। किसी को मालूम है ? अनुभवी पुरुषों को है, साईंसदानों को नहीं। जो मन बुद्धि के घाट पर बैठे हैं उन को नहीं। जो इंद्रियों से मन और बुद्धि से परे जाने वाले हैं उनके लिए है। वह तो जाने जां बबीनी। इस पर ताकीद की है :-

बबायद चश्मे सर माशूक़ दीदन
कला मिश रा बगोशे खुद शुनीदन

चाहिए कि हम अपनी आंखों से उस मालिक को देखें, वे कान ज़ोलें जिस से हम उस के कलाम को सुन सकें। है तो सही मगर हरबर्ट सपैंसर यहां पर सिर नीचा करता है। वह यही कहता है भई मन बुद्धि से जाना नहीं जा सकता। न किसी को भई हकीकत का पता है, न वह मालूम हो सकती है, झगड़ा ही छोड़ दिया। तो यह साईंसदानों का हाल है जिन को हम सब कुछ मान रहे हैं समझे। आखिर उसे इस हकीकत को मानना पड़ा और अपने एक माहवारी अखबार में जो उन दिनों निकला करता था उस में लिखा कि इस दुनिया में एक अनंत शक्ति काम कर रही है, एक अनंत limitless और अविनाशी, नाश न होने वाली जिस से हर एक चीज़ प्रफुल्लित होती है। कोई चीज़ है भई, अविनाशी है, पता नहीं ज़्या है ? उस को किसी ने जाना नहीं, न जाना जा सकता है बुद्धि से मगर कोई है सही। जो ज़िंदगी का आखरी तजरबा उस को (हरर्बट स्पैंसर को) हुआ, उस ने लिखा कि भई एक हकीकत ज़रूर है जो लाज़्यान है, न ज़्यान होने वाली चीज़ है मगर है ज़रूर।

ऐसे ही उस के बाद (हरबर्ट स्पैंसर के बाद) और और महात्मा आये, साईंस के महात्मा कहो, परमार्थ के महात्मा नहीं। जर्मन फिलासफर कैंट था, मशहूर आदमी है। वह ज़्या लिखता है ? उस ने तलाश की बहुतेरी कि हकीकत का कुछ पता मिल जाये मगर आतुर होकर, न जाने जा सकने वाली हकीकत पर विचार करना ही छोड़ दिया कि भई वह तो जानी नहीं जा सकती, उस का ज़्यों विचार करें ? जो जानी जा ही नहीं सकती, बुद्धि के दायरे में आ नहीं सकती, उस के मुतल्लिक ज़्यों सिर खपाई की जाये। जो हाफिज़ साहब ने कहा न:-

हदीस मुतरब वमे गो वराज़े दहर कमतर जो
कि किस न कशूदो न कुशायद बा हिकमत ईं मुअज़्मा रा

तो उस का यह बयान है। फिर जान स्टुआर्ट आये। उन्होंने Three Essence of Religion एक किताब लिखी है, उस में इस का ज़िक्र किया है। वह ज़्या कहते हैं कि आदि कारण, First cause के बारे में जो तजरबा बतलाते हैं और कारण शज़्द के मायने जो हम ने समझे हैं वे ये हैं, सब कारणों में जो आदि और व्यापक तत्व मौजूद है उस के बगैर और कुछ नहीं हो सकता। एक ताकत है जो सब में समा रही है वह आदि है। वह ज़्या है ? यह तो पता नहीं। तो साईंसदानों ने भी यहां सिर नीचा किया।

भई है सही, कुछ है ज़रूर मगर ज़्या है यह पता नहीं। ब्रहदारण्यक उपनिषद अब हमारा ज़्या कहता है। उन्होंने भी इस बात को खोल कर समझाया है कि हकीकत न ही नाम, रूप के ज्ञान की तरह इल्म की पकड़ में आ सकती है और न ही वर्णन की जा सकती है। जैसे रेत से तेल का निकलना, शराब से प्यास का बुझना नामुमकिन है इसी तरह ब्रह्म को इल्म के दायरे में या पकड़ में लाना नामुमकिन है। आखिर ज़्या कहा ? न इति, न इति, यह नहीं, यह नहीं, कुछ और है। कुछ मालूम नहीं ज़्या है। ज़्योंकि बुद्धि में आने वाली चीज़ नहीं है न, बात तो यह है। तो सब ने अपनी अपनी जगह यही बयान किया। वह आदि शक्ति है, एक है जो अनंत और

अविनाशी है। फिर जान स्टुआर्ट ने, यह भी साईंसदान हुआ है, जान स्टूआर्ट मिल, वह कहता है यह शक्ति असल में एक और एक रस है, हमेशा रहने वाली है, कभी बदलती नहीं और ब्रह्मंड में एक खास मिकदार में मौजूद है जो कभी घटती नहीं और बढ़ती नहीं, एक रस और पूर्ण है। पूर्ण से निकालो पूर्ण, फिर भी पूर्ण है, पूर्ण में कुछ और डाल दो, फिर भी पूर्ण, वह घटती बढ़ती नहीं। अब सवाल यह आता है यह जो चेतनता है न हमारे में, हर एक इंसान में, हम यह मानते हैं कि परमात्मा consciousness है, चेतन स्वरूप है। यह आई कहां से चेतनता समझे ? इस के मुतल्लिक बयान करते हुए आप देज़िए साईंसदानों ने बड़े तजरबे किए हैं। एक बतख का अंडा और एक मुर्गी का अंडा दोनों सेए गये। एक से और किस्म का बच्चा पैदा होता है दूसरे से और किस्म का। वह कौन सी शक्ति उस में काम करती है जो इस में तमीज़ कर जाती है। इस के मुतल्लिक साईंस वाले नहीं मालूम कर सके। यह तो कह सकते हैं गर्मी दे कर बच्चा तो पैदा कर सकते हैं मगर यह तमीज़, यह इज़्तलाफ कैसे कि एक अंडे में से एक, दूसरे में दूसरी शज़्ल और तीसरे अंडे में तीसरी पैदा हो जाती है और रंग भी मुखतलिफ। इस को साईंसदान नहीं जान सकते।

तो मैं यह अर्ज़ कर रहा हूं कि हम यह समझते हैं जो साईंसदान बेचारे कोशिश में हैं, इस तलाश में हैं कि उस शक्ति को जान सकें। उन साईंसदानों के जो लीडर रहे वे यह कह रहे हैं। लीमार्क थे, Evolutions (विकास) का जो मज़मून है न इस के जानने वाले थे, बड़े माहिर थे, वह ज़्या कहते हैं। कहते हैं नेचर जो है न कुदरत, Nature is but an order of things, एक बाकायदगी में है, ऐसे नहीं अंधाधुंध कोई नहीं जा रहा। वक्त पर सूरज चढ़ता है, वक्त पर गुज़रता है हर साल। बाकायदा टायम नोट करो, ऐन उसी वक्त पर उतरता और चढ़ता है। मौसम वक्त पर आते हैं, हर एक चीज़ बाकायदगी से चल रही है, आपा धापी नहीं, in order है। कोई चीज़ है जो इस को कंट्रोल कर रही है, subject to laws originating from the Will of the Supreme Being. कुदरत कोई ऐसे कानूनों के मुताबिक चल रही है जो किसी ऐसी ताकत, महान शक्ति के बनाये हैं जिन के मुतल्लिक हम अभी कुछ नहीं जानते। कोई है सही, वह ला इंतहा है हमेशा ही। Of whose existence and boundless power man has from observation concieved an indirect though sound idea. है कोई ताकत, हम बराहे रास्त उस को नहीं जान सके। मगर नतीजा अख़ज़ (निकालते) करते हैं कि कोई ऐसी ताकत है। अरे भई घड़ी चलती रहती है, कोई बनाने वाला है न उस का। यह जो सारा सिलसिला बाकायदगी में जा रहा है, इस का कोई maker (बनाने वाला) हो सकता है कि नहीं ? बाकायदा एक ताकत है। आज सूरज यहां से चढ़े कल वहां निकल आये, परसों वहां से निकल आये तो। यह लामार्क ने इस के मुतल्लिक फरमाया। अब डार्विन साहब की थ्योरी बड़ी मशहूर है। कहते हैं वह परमात्मा से मुनकर (नास्तिक) था मगर यह बात सही नहीं। उस ने बयान दिया है। उस ने एक किताब लिखी है Origin of the Species. यह इस लिए quotation (हवाला) दे रहा हूं आप को, आप चाहें तो आप वहां मुताल्या कर सकते हैं, Origin of the Species. किताब में उन्होंने बयान किया है कि मैं नतीजा निकालता हूं, infer ज़्या ? कि That all organic beings have descended from one primodial form into which life was breathed by the Creator. कि जो कुछ बन रहा है किसी ऐसी हस्ती से जो सब से आदि थी, उस के सबब से यह जो बनी उस के कारण से बन रही है। जिस को हम नास्तिक कहते हैं कि वह नास्तिक था, वह नास्तिक नहीं था भई वह आस्तिक था मगर उसके न जानने के सबब से साफ साफ कहा भई हमें उस के मुतल्लिक पता नहीं। माफ करना जितने आप बैठे हो कितने लोग हैं जो जानते हैं कि परमात्मा है सोचने वाली बात है। लैक्करार भी होंगे, कथा करने वाले भी होंगे ग्रंथों पोथियों के माहिर, quotation (हवालों) की भरमार देने वाले भी होंगे मगर कितने लोग हैं जिन्होंने अपनी आंखों से देखा है। साईंसदान जो कुछ देखता है वह ज़्यान करता है, भई हमारे कज़्जे में इतनी आई है चीज़। इस से ज्यादा न हो सकती है न कुछ।

तो उस डार्विन ने तीन चिट्ठियां लिखीं आखरी दिन। अरे भई सब से बड़ा वेद और ग्रंथ यह इंसानी जिस्म है। ग्रंथों, पोथियों में इसी जिस्म की महिमा गाई गई है। इसी के अंतर दाखिल होने के राज़ को खोला गया है। तो उस डार्विन ने लिखा कि at present (इस वक्त) यह फजूल बात है भई सोच विचार में करने से Origion of the Life कि यह चेतनता कैसे बनी, कहां से आई, यह विचार करने के काबिल ही नहीं सकता। कहता है One might as well think of the origin of nature. कहते हैं उस चेतनता के पीछे न जाओ। इस में जाओ कि माद्दा कैसे बना? इस को सोचो भई, उस के (चेतनता) के मुतल्लिक तो पता नहीं कहां से आई कैसे बनी, ज़्या हम बना सकते हैं? अब आप देखिए, एक मिसाल दे कर अर्ज़ करूं, आप हज़ारों ही पहली जमात के लड़के जिन की बुद्धि अभी डवैलप नहीं हुई, मिला दो पूरी अकल वाला एक आदमी नहीं बनेगा।

अभी तक Force को तो वह पैदा कर सकते हैं कंबीनेशन (combination जैसे Zinc Oxide बनता है या यह कहो copper fillings (पीतल के टुकड़े) हैं उस पर अगर सलज़्यूरिक एसिड (गंधक का तेज़ाब) डालो तो वह bubble करता है, उस में बुलबले उठते हैं। पैदा तो हो गई चीज़ मगर उस में चेतनता नहीं। चेतनता तो अभी तक कोई साईंसदान बना नहीं सका है। Consciousness हम महसूस करते हैं न, देख रहे हैं, यह चीज़ नहीं पैदा कर सके, बाकी बहुतेरा कुछ पैदा कर सके हैं।

तो ज़्यान करते हैं यह एक फजूल सी बात है, इस बात के बारे में विचार करना भी वक्त ज़ाया करना है ज़्योंकि वह तो बुद्धि के दायरे में आ ही नहीं सकती है। इस लिए इस के मुतल्लिक न सोचो, यह देखो कि यह माद्दा कैसे बना है जिस से यह सारा जगत बना, यह जिस्म बना है उस के मुतल्लिक विचार करो। फिर एक और दोस्त को चिट्ठी लिखी उस के बाद, वह कमेल साहब थे। ज़्या कहते हैं, The principle of life seems to me to be beyond the confines of science कि यह चेतनता, यह ज़िंदगी कैसे बनी, यह एक ऐसा मज़मून है जो साईंस की हद से परे है। साफ कह दिया कि यह साईंस भी उस को साबित नहीं कर सकती। साईंस बाहरी दृष्टमान (दिखाई देने वाली) चीज़ों को कि वह कैसे बनीं, कैसे नहीं बनीं, इस को तो बयान करती है इस के causes (कारण) बता सकती है मगर इस से परे वह चेतनता है जो इन चीज़ों को जो आधार दे रही है उस के मुतल्लिक कुछ नहीं जानती कि यह मज़मून ही परे है उस के दायरे से। उस (डार्विन) का आखरी फैसला है, अब एक और चिट्ठी आखरी दिन जो लिखी है तीन चार दिन पहले कहते हैं मौत से, वह लिखते हैं No evidence has yet in my opinion been advanced in favour of a living being, being developed from the inorganic matter. कहते हैं कोई चीज़ आज तक ऐसी मेरे दिमाग में नहीं आ सकी जिस से साबित हो कि जो माद्दा, जड़ चीज़ है उस से जड़, चेतन चीज़ से चेतन चीज़ पैदा हो सकती हो।

तो सारे महात्मा जो साईंस के हैं वह भी यही बयान करते हैं। हज़्सले हुए हैं, वह ज़्या लिखते हैं? उन्होंने बायोलोजी (Biology-जीव विज्ञान) पर मज़मून लिखा है जो Encyclopedia Brittanica है न उस में इस का ज़िक्र दिया है। वह कहते हैं Of the causes that have led to the originating of matter it may be said. कि जितने सबब हैं जो लाइफ के ज़िंदगी के, पैदा करने वाले हैं उन के मुतल्लिक यह कहा जा सकता है कि he said that we know nothing, कि हम को इस के बारे में कुछ भी पता नहीं कि कैसे ज़िंदगी इस में आ जाती है। बच्चा पेट में आया, उस में ज़िंदगी पैदा हो गई। यह कैसे आई? कि इस को हम साबित नहीं कर सके, अभी तक नहीं कर सके। तो इस लिए आप देखेंगे ऐसे ही और महात्मा भी कह रहे हैं मगर जो ज़ाते हक है (परमात्मा) मेरे कहने का मतलब है जिस को साईंस वाले बुद्धि के दायरे और अपनी सारी तफतीशों के साथ जो आज तक उन्होंने की है, एटम बम बनाए हैं, हाइड्रोजन बम बनाये हैं, आसमानों पर उड़ने का सामान बनाया है, वह भी कासिर हैं कि यह चेतनता कैसे पैदा हो सकती है? यह नहीं बना

सके। यहां तक कह दिया कि कमिस्ट्री में कोई ऐसी चीज़ नहीं, The production of life is not in the present range of practical Chemistry, चेतनता का पैदा करना, कहते हैं यह कमिस्ट्री की हद से परे है। सब महात्मा यह कहते हैं। अब वही है जिस के हम सब पुजारी है मगर उस का हम को पता करना हो तो कहां से करेंगे ? जाओ किसी अनुभवी पुरुष के पास जिस ने इस का अनुभव किया है। वही सब का माबूद है:-

सैंकड़ों आशिक़ हैं दिला राम सब का एक है,
मज़हबो मिल्लत जुदा हैं, काम सब का एक है।

हर एक उसी का पुजारी है कि नहीं ? सिख हो, हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, कोई भी हो। कोई उस को गौड कहता है, कोई उस को राम कहता है, कोई उस को रहीम कहता है, कोई परमात्मा कहता है, कोई वाहेगुरु कहता है। अनेकों नाम उस के हैं, है तो सब का आदर्श वही। अरे भई उस का पुजारी बनना है, उसी को पाना है। अब देखने वाली चीज़ यह है कि उस के पाने के लिए उस ज़ात के मुतल्लिक सब महात्माओं ने बयान किया है। वेदों शास्त्रों को पूछो, वह भी यही कह रहे हैं। यही सत्यसूत्र उपनिषद है, उस में है कि अकेला ही उस सृष्टि को पैदा और फना करने वाला वही परमात्मा है। वह किसी का मोहताज नहीं है, खुद बनाने वाला है। श्रृगवेद में भी है कि उस परमात्मा की तारीफ करो जिस ने सारी दुनिया बनाई है यानी सब महात्मा इसी बात को खोल खोल कर बयान करते हैं। भगवत गीता ज़्या कहती है ? आप ग्यारहवां अध्याय पढ़ें। उस में लिखते हैं वही सारे जगत का पिता और सब के रचने वाला है। फिर कहा, दसवें अध्याय में, ऐ अर्जुन इस सारी सृष्टि की पैदाइश का जो मूल है वह मैं ही हूं समझे। जो जंगम या स्थावर है वह मुझ बिना नहीं है। मेरे आधार पर यह सब दुनिया चल रही है। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब है कि सब महात्मा उस परमात्मा के पुजारी हैं:-

एक पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई॥

यह तो गुरु अर्जुन साहब ने कहा और कबीर साहब ज़्या कहते हैं:-

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे॥
एक नूर ते सब जग उपजेया कौन भले को मंदे॥

यही सेंट जान ने भी कहा, In the beginning was the Word, and the Word was with God and the Word was God. The same was in the beginning with God. All things were made by Him and without Him was not anything made that was made [St. John 1-1].

जब वह (प्रभु) था उस वक्त कुछ नहीं था, वह शज़्द था। तो मतलब सिर्फ इतना है कि जितने महात्मा आज दिन तक आये, कई लोगों का ज़्याल है कि वे अपनी पूजा कराते रहे। नहीं, वह उस ज़ाते हक के जानने वाले counsciousथे, इस का अनुभव कर रहे थे। अनुभव करते हुए जो एहसास उन्होंने किया, अनुभव किया दुनिया को बतलाया, भई परमात्मा है। ग्रंथों पोथियों में उस का ज़िक्र है। उस वक्त एक शज़्द आ रहा है आपके सामने गुरु अर्जुन साहब का जिस में उसी परमात्मा की तारीफ की है। शुरु करते हैं और कैसे उस को पा सकते हैं, ज़्या कर सकते हैं, ज़्या नहीं उस का वाजेह तौर से बयान होगा। फरमाते हैं:-

आद निरंजन प्रभ निरंकारा॥
सब में वरते आप निरारा॥

वह आदि है, माया से रहित है, matter से above (ऊपर) है, निरंकार है, त्रिगुणातीत है और ज़्या है। कहते हैं सब में वरते आप निरारा, सब में परिपूर्ण है और सब को कंट्रोल कर रहा है। साईंसदान उस की existence को नहीं पा सके मगर वह आदि है समझे। आदि होने से इस को बनाने वाला भी है, इस में परिपूर्ण भी है और इससे अतीत भी है, इस का मोहताज नहीं।

वरण जात चिन्ह नहीं कोई सब हुज़्मे सृष्ट उपाएंदा॥

कहते हैं उस की कोई जाति या वर्ण है ? कहते हैं नहीं ? वह सब वर्णों और ज़ातों से रहित है। कहते हैं सारी सृष्टि उस के हुज़्म से पैदा हुई है।

विण नावें नाहिं को थाओं॥

और

नानक नावें के सब किछ वस है

वह कंट्रोलिंग पावर है, उस के हुज़्म के बिना 'बिना हुज़्म नहीं झूले पाता'। सारी कायनात उस के हुज़्म में चल रही है, आगे कानून बना दिये कुदरत के। वह कानूनों के मुताबिक सब सिलसिला चल रहा है, बाकायदगी से, आपाधापी नहीं। यह बाकायदगी ही हम को बतलाती है कोई चीज़ ऐसी है जो सब को सैट कर रही है।

लज्ख चौरासी जोन सबाई॥
माणस को प्रभ दी वडियाई॥

कहते हैं चौरासी लाख जिया जून (योनियां) बनाये, जल थल हर एक किस्म के। चार खानें ज़्यान की है, एक तो वे हैं जो पसीने से पैदा होते हैं, ज़मीन से पैदा होते हैं उतभुज जो पसीने से पैदा होते हैं, एक वे हैं जो अंडे से पैदा होते हैं, एक वे हैं जो झिल्ली में लिपटे हुए पैदा होते हैं जैसे इंसान और हैवान। चौरासी लाख किस्म के जीव जन्तु हैं, उन में मनुष्य जन्म सब से ऊंचा है।

सरब जून तेरी पनिहारी॥
सरब में तेरी सिक्कदारी॥

इस मनुष्य जीवन में हम उस का अनुभव कर सकते हैं जो आदि है सब का और किसी योनि में नहीं। यह फज़ीलत (बड़ाई) अगर दी गई है तो केवल इंसान या मनुष्य जाति को ही दी गई है और किसी को नहीं दी गई।

इस पौड़ी ते जो नर चूके सो आये जाये दुख पाएंदा॥

कहते हैं चौरासी लाख जियाजून की सरदार योनि मनुष्य जीवन में जो आ गये कहते हैं अगर उस में उन्होंने अपने आप को और प्रभु को नहीं पहचाना एक बार यह पौड़ी हाथ से छूट गई तो इस का नतीजा ज़्या होगा ? आये गये दुख पाएंदा, यहां भी दुखी रहेगा फिर आना जाना भी बना रहेगा, बात तो यह है। फरमाते हैं:-

भई प्राप्त मानुख देहुरिया॥
गोबिन्द मिलण की एह तेरी बरिया॥

कि गोबिंद के मिलने का वक्त है। वह ला महदूद हस्ती है जिसके मुतल्लिक सब साईंसदान सिर नीचा कर गये, वह बुद्धि के दायरे में नहीं आती मगर है ज़रूर। उस के अनुभव करने का मौका मनुष्य जीवन है। अगर मनुष्य जीवन में हमने यह काम नहीं किया, अवर काज तेरे किते न काम, जन्म बरबाद चला गया। यहां भी दुखी रहे मर कर भी दुखी। फिर बार बार आने जाने का दुख सिर पर कायम है:-

कीता होवे तिस किया कहिए॥ गुरमुख नाम पदार्थ लहिए॥

यानी यह सब किया हुआ उसी का पसारा है। अब जो किया हुआ है उस करने वाले का ज्ञान ज़्यान करे। बताओ कीता होवे तिस किया कहिए, अब हम बनाए हुए हैं अब जिस ने किया उस के मुतल्लिक हम ज़्या कह सकते हैं ?

पिता का जन्म ज़्या जाणे पूत॥
रात परोई अपने सूत॥

तो कहते हैं गुरमुख नाम पदार्थ लहिये कि अगर उस हकीकत को पाना है तो उस का कोई ज़रिया ? कहते हैं गुरमुख बनो। गुरमुख किसी अनुभवी पुरुष आत्म तत्व दर्शी कहो जिन्होंने उस का अनुभव किया है, अगर वह आदि और निरंजन जो है, अतीत है, जिस के मुतल्लिक साईंस कहती है कि हमें कुछ पता नहीं है। भई हम

यह भी नहीं साबित कर सकते यह चेतनता आई कैसे ? कैसे बन सकती है ? बाकी तो सब कुछ किया। अगर आप उस को जानना चाहते हो तो किसी अनुभवी पुरुष के पास जाओ, गुरमुख बनो। उस के सज़्मुख बैठो और वह ज़्या कहता है ? अरे भई नाम जपो। वह अनाम है वह पावर मगर into being (इज़हार) आके वह नाम बनी, सब खंडों ब्रह्मंडों को बनाने वाली कंट्रोलिंग पावर और परिपूर्ण है। उस पदार्थ के साथ लग जाओ। इस से आप की वह आंख खुलेगी contact करने से, जिस से वह हर एक जगह नज़र आयेगा समझे :-

जेता कीता तेता नाओं ॥
विण नावें नाहीं कोई थाओं ॥

जितना यह किया हुआ पसारा है यह सब नाम का है, कोई ऐसी जगह नहीं जहां पर नाम न हो। तो कहते हैं किया हुआ करने वाले के मुतल्लिक उस के मुतल्लिक ज़्या कहेगा ? ज़्या कह सकता है ? हां यह है कि अगर गुरमुख बन जाओ, नाम के पदार्थ की दात को पा जाओ तो फिर वह हर एक जगह परिपूर्ण है। आप की वह आंख बन जायेगी जिससे वह नज़र आता है:-

जिस आप भुलाये सो ही भूले
सो बूझे जिसे बुझाएंदा ॥

अगर वह मालिक न चाहे, कौन उस को पा सकता है ? जिस को वह चाहे वही उस को पा सकता है। वह चाहे तब यह सारा सामान ज़्या बनता है ? कोई मिला हुआ देता है बस वह यही है। आप को पता हो, हज़रत इब्राहीम साहब एक बार दरिया में एक किश्ती में जा रहे थे। वह ही बैठे थे एक धनाढ (अमीर) आदमी भी उस में सैर तफरीह के लिए जा बैठे। कई लोग सैर के लिए जाते हैं न। नक्काल थे, नकलें करने लगे, हंसी खुशी की बातें तो यह चुपचाप बैठे थे। कायदे की बात है सब हंस रहे हों एक आदमी चुपचाप बैठा हो तो नक्कालों ने उन की नकलें उतारनी शुरु कर दीं। हज़रत इब्राहीम साहब लिखते हैं कि मुझे अंतर में बशारत हुई, खुदा ने कहा देख ऐ इब्राहीम, तेरी निरादरी मुझे मंजूर नहीं, अगर तू कहे तो इस बेड़ी (किश्ती) को उलट दिया जाये, इन को डुबो दिया जाये और कहते हैं मैंने खुदा से अर्ज़ की ऐ खुदा इन बेचारों का ज़्या कसूर है। हां अगर आप दयावान हुए हो तो यह जेहल और अविद्या में है उन का यह पर्दा उतार दो समझे। कहते हैं जब पर्दा उन का उतर गया सब आके इन से माफी मांगने लगे कि महाराज हम से गलती हो गई। तो महात्मा दुनिया में आते हैं, लोग उन की निरादरी भी करते हैं फिर भी वह 'बेचारे' कहते हैं, इन बेचारों का ज़्या कसूर है भई:-

जित दवारे उभरे तिज़े लेओ उबार ॥

कि हे मालिक, दया करो इन के ऊपर, जिस तरह से यह उभर सकते हैं उसी बहाने से इन को निकाल लो। वे तो हमारे हमदर्द हैं, उन की आंख खुली है, हम सब की बंद है, वे हम पर दया करते हैं। वे तो दया करते हैं, हम समझते हैं उन की कोई गर्ज़ होगी ज़्योंकि दुनिया में गर्ज़मंदी का सौदा है न। यह बेगर्ज़ी से आये, घर से तकलीफ सिर पर उठाये सुबह से शाम तक काम मुज़्त में करे, बुरा भला अलहदा कहलाये, फिर जो कहो, हां भई, इस में मतलब ज़रूर होगा। जैसी ऐनक वैसी ही दुनिया नज़र आती है न:-

हरख सोग का नगर एह किया ॥
सो उबरे जो सत्गुर सरणइया ॥

कहते हैं यह नगर (जिस्म) जो तुम लिए बैठो हो यह सुख और दुख का धाम है, हरख और सोग का नगर है। इस से ऊपर कौन आ सकता है ? से उभरे जो सत्गुर सरणइया, जो किसी अनुज़वी पुरुष के चरणों में आ गया वह इस से उभर गया बाकी नहीं। यही स्वामी जी महाराज ने फरमाया, ज़्या कहते हैं:-

छोड़ो ये सुख दुख का धाम।

चढ़ कर लगो अब सतनाम॥

सतनाम जो है उस के साथ लगो इस (पिंड) से ऊपर आ जाओ जो धाम, जिस्म है सुख और दुख का धाम इस से ऊपर आकर सतनाम, अटल नाम जो है उस के साथ लग जाओ। सब महात्मा एक ही बात कहते हैं मगर सुख दुख के धाम से ऊपर आकर, जब तक आप जिस्म जिस्मानियत का रूप बने बैठे हो तब तक उस के साथ नहीं लग सकते। क्राईस्ट ने इसी लिए कहा कि जो लोग इस बाहरी ज़िंदगी को पकड़े बैठे हैं वे हमेशा की ज़िंदगी से खाली रह जाते हैं। जो हमेशा की ज़िंदगी पाना चाहते हैं उन के लिए इस ज़िंदगी की कोई कीमत नहीं। जब पिंड से रूह ऊपर आ गई जिस्म मिट्टी का ढेर हो गया, बाकी ताल्लुकात की ज़्या कीमत रह गई, चार दम को छीपरो, ज़्या कीमत है ? आधी कौड़ी भी इस की कीमत नहीं है। जो नाम के जपने वाले हैं भई लखीना, भई लाखों का आदमी बन जाता है, उस की कीमत बन जाती है। जो इसी जिस्म जिस्मानियत में रहे, दुख सुख के धाम में रहे, यहां भी दुखी रहे, बार बार आते रहे दुख का ज़ात्मा न हुआ। तो कहते हैं जो सत्गुरु की शरण में आयें वे सुख दुख के धाम से ऊपर आते हैं, हकीकत से वे वासिल हो गये। जब तक आप मन इंद्रियों के घाट पर बैठे हैं बाहरी दुनिया में खचित हैं तब तक उस हकीकत से दूर हैं।

उस हकीकी फिलसफे की अलिफ, बे कहो, A,B,C, कहो, कहां से शुरु होती है ? Where the world's philosphies end there the religion starts. जहां दुनिया के फिलसफे खत्म होते हैं न वहां से शुरु होती है। इंद्रियों से ऊपर आओ अलिफ बे शुरु होगी। बताओ जितने हम साधन कर रहे हैं कहां पर बैठे हैं ? इंद्रियों के घाट पर। जब आप किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में जाओगे, वह कहते हैं, छोड़ो यह दुख सुख का धाम, छोड़ो पिंड चलो ऊपर, अलिफ, बे वहां से, अंतर ज्योति प्रज़्ट होगी, चल पड़ो आगे, आगे श्रुति है, नाम की ध्वनि है। उन की अलिफ, बे वहां से शुरु होती है जहां से दुनिया के फिलसफे खत्म हो जायें। कितना ऊंचा मार्ग है ? और यह काम हम कब कर सकते हैं ? मनुष्य जीवन में ही, यह चौरासी लाख जियाजून की सरदार जूनी है, यह आप को भाग्य से मिली है:-

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे अहला जन्म गंवाया॥

एक बार मनुष्य जीवन हाथों में आया, हाथों से निकल गया फिर यह जन्म तो बरबाद चला गया। तो गुरु अर्जुन साहब ताकीद कर रहे हैं, हकीकत को पहले बयान कर चुके हैं कि प्रभु है, वह आदि है, अविनाशी है, निरंजन है, निरंकार है। उस को हम ने पाना है, जानना है जो बुद्धि से परे है, कैसे जानोगे ? कहते हैं गुरमुख बनो, नाम के साथ लगो। यह काम कब कर सकते हो ? कहते हैं जब आप को यह मनुष्य जीवन मिला, यह मनुष्य जीवन आप के हाथों से निकल गया, समझो बरबाद चला गया फिर या नसीब कब मनुष्य जीवन मिले, फिर आप यह काम कर सकते हो और किसी जूनी में आप का यह काम नहीं कर सकते:-

त्रिहां गुणां ते रहे निरारा, सो गुरमुख सोभा पाएंदा॥

कहते हैं जो सत्गुरुओं की शरण, ज़्या, सत स्वरूप हस्ती, अनुभवी पुरुष के चरणों में आ गया उस को ज़्या उपदेश देते हैं। अरे भई तू त्रिगुणात्मक अंडे में बंद है, इस से ऊपर आ, तीन गुणों से न्यारा हो। जब तू ऊपर आयेगा तो सच्चे मायनों में गुरमुख बन जायेगा और शोभा पा जायेगा मालिक की दरगाह में भी और दुनिया में भी:-

सच्चे मार्ग चलदियां उस्तत करे जहान॥

दुनिया भी वाह वाह करती है और प्रभु के दर पर भी कबूल हो जाता है मगर कब का सवाल है, जब आप तीन गुणों से पार आ जाओगे समझे। यही भगवान कृष्ण जी ने अर्जुन को इशारा दिया है जहां त्रिगुण विश्व वेदा का ज़िक्र किया है। कहा है भूतियो अर्जना कि ऐ अर्जुन तीन गुणों के पार चल, इशारा दे दिया। तो सत्गुरु के चरणों में आकर हम तीन गुणों से पार, त्रिगुणातीत अवस्था को पा सकते हैं, किस के

ज़रिये ? नाम के ज़रिये, कैसे ? गुरमुख हो कर और कोई उपाय नहीं। और यह काम कब कर सकते हैं ? केवल मनुष्य जीवन में और किसी योनि में नहीं। एक बार मनुष्य जीवन हाथों से निकल गया जन्म बरबाद हो गया। देखो कितनी ज़रूरी चीज़ है। हम इंद्रियों के भोगों रसों में सारा जीवन व्यतीत कर जाते हैं। यही हमारी दुनिया, यही दीन, यही ईमान, यही खुदा बनी बैठी है। जिस्म की कीमत ज़्या है ? आधी कौड़ी भी नहीं। जिस्म जब छूटता है अंत समय आकर देखो किसी को ज़्या रह जाता है?

अनिक कर्म किए बहुतेरे॥ जो कीजे सो बंधन परे॥

फरमाते हैं कि इंसान ने अनिक कर्म किए बहुतेरे, अनेकों कर्म हर एक इंसान करता रहा मगर नतीजा ज़्या है ? जो कर्म किया वह सब बंधन का मूल रहा। जब मन इंद्रियों के घाट पर रहा सकाम कर्म किए कुरता होने की हैसियत में किए:-

जो जाणे मैं किछ करता तब लग गर्भ जून में फिरता॥

बंधन का कारण बना ना दिनों दिन। भगवान कृष्ण जी ने गीता में इस का थोड़ा सा ज़िक्र किया है कि जीव को बांधने के लिए नेक कर्म और बद कर्म दोनों एक जैसे हैं जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी। जब तक नेह कर्म न हो इंसान, तब तक काम नहीं बनता। और नेह कर्म होना त्रिगुणातीत अवस्था को पाना गुरमुख हो कर होगा नाम की कमाई से मनुष्य जीवन में:-

कुरता बीज बीजे नहीं जज़्में सब लाहा मोल गवाएंदा॥

आप देखें, जब खेती का कोई मौसम हो न किसी चीज़ को बीजने का, उसी वक्त उस को बीजो तो वह फलता है। अगर उस वक्त न बीजो तो फजूल चला जाता है। कहते हैं आज कल वह बीज है न, नाम का, उस को बीजो।

अब कलू आयो रे नाम बोवो बोवो॥

आन रुत नाहीं नाहीं मत भर्म भूलो भूलो॥

आज कल तो भई नाम से निस्तारा है, कहते हैं किसी भ्रम में न जाओ, नाम के रस को पाओ। कुरता बीज न बीजो और जो कर्म धर्म तुम कर रहे हो वे इंद्रियों के घाट के हैं, बड़े लज़्बे हैं लाखों वर्ष, कहते हैं जब उम्र थी अगर किसी ने उस वक्त हज़ारों वर्षों तप कर लिया तो हो सकता है कर लिया होगा भई मगर आज तुम ज़्या कर सकते हो वह कर्म धर्म, आज फी ज़माना हम उस काबिल नहीं रहे। हैं तो ज़रूर यह साधन मगर लज़्बे हैं। कहते है आज कल तो भई short cut करो (रास्ता छोटा करो), थोड़ी आयु है निर्बल जीव है। नाम के साथ लगने का मज़मून है यह मौसम का, समय का बीज है। बाकी सब कुरते बीज हैं, सब फजूल चले जायेंगे, नतीजा उस का ज़्या होगा ? जो लाहा था वह भी गंवा लोगे, जन्म बरबाद चला जायेगा।

कलजुग में कीर्तन परधाना॥ गुरमुख जपे लाये ध्याना॥

अब शक न रहे कि कुरता बीज कौन सा है और बीज आज कल का जो बीजा जा सकता है वह कौन सा है ? कहते हैं कलजुग में कीर्तन प्रधान है समझे। कलयुग में कीर्तन प्रधाना। गुरमुख जपिए लाये ध्याना, गुरमुख हो कर उस को जपो, पूरा ध्यान और तवज्जो उस में लगाओ। अब कीर्तन किस को कहते हैं ? आम दुनिया बाहरी गाने बजाने को, गुणानुवाद गाने को कीर्तन कहती है मगर संतों ने इस की कुछ और तारीफ की है और बाहर गाने बजाने का निर्णय किया है समझे।

रागी नादी गावें बहु भांति, करता नाहीं भीजे हर हर राया॥

इस की कीमत अदा कर दी कि इस में प्रभु नहीं भीजता (खुश होता), थोड़ी तैयारी है। अपराविद्या का साधन है मुबारिक रहे मगर वह कीर्तन कौन सा है जो कलजुग में परवान है जिस को गुरमुख बन कर ध्यान लगा कर सुनो, उस की तारीफ फिर गुरु साहबों ने की है:-

राम नाम कीर्तन रत्न वत्थ हर साधु पास रखीजे॥

जो रमे हुए नाम में ध्वनि हो रही है न, कहते हैं वह कीर्तन है, वह हीरे और जवाहरात रत्नों जैसी कीमती चीज़ है। उस की पूंजी हरि ने साधु के पास रखी है। जाओ अनुभवी पुरुष के पास। साधु किसी अनुभवी पुरुष का नाम है जो मन इंद्रियों के घाट से ऊपर त्रिगुणातीत अवस्था को पा चुका है। साध की महिमा तेह गुण से दूर। जो त्रिगुणातीत अवस्था को पा गया उस का नाम साधु है। उस के पास हरि ने रखी है वह चीज़। किस को मिलती है ?

जो बचन गुर सत सत कर माने
तिस आगे काढ धरीजे॥

जो उस के वचनों को सत कर के मानते हैं वह सामने रख देगा। फिर जगह जगह गुरबाणी में इस का निर्णय किया है:-

साध संग हर कीर्तन गाइए॥

साधु के संग, अनुभवी पुरुषों की सोहबत में यह हरि कीर्तन गाया जाता है।

साध संगत हर कीरत है सिर करमन के करमा॥

सब कर्मों का सिरकर्म है, साधु की संगत में हरि का कीर्तन है। कहते हैं किस को मिलता है ? जिस को पुरब लिखे का लहना, जिस को मालिक आप दया करे। फिर कहा अखंड कीर्तन, यह जो कीर्तन है अखंड हो रहा है, चौबीस घंटे हर वक्त हो रहा है; हम उधर तवज्जो दें न दें, हर वक्त हो रहा है। जब वह डवैलप (develop प्रज़्ट) हो जाता है किसी साधु की कृपा से, चौबीस घंटे कीर्तन जारी हो जाता है। बगैर धेले पैसे दिये अखंड कीर्तन का भोजन किस को मिलता है ?

अखंड कीर्तन तिन भोजन चूरा॥
कहो नानक जाके सत्गुर पूरा॥

जिस को पूर्ण अनुभवी पुरुष मिल गये कहते हैं उन को अखंड कीर्तन का भोजन जारी रहता है। हाफ़िज़ साहब ज़्या कहते हैं ? कि शाम का वक्त जब होता है तो हमारा गवइया बगैर धेले पैसे के गाने को आ जाता है। हर वक्त अब भी हो रहा है। हमारे कान ज़्यों नहीं सुनते ? फैलाव में हैं। गुरु अमरदास साहब ने फरमाया:-

ऐ श्रवणो मेरेयो हर सरीर लाए सुणो सत बाणी॥

वह सत बाणी जो है उस को सुनो। वह कौन सी सत बाणी है, यही:-

बाणी वज्जी चौह जुगी सच्चो सच सुणाये॥

यह बाणी चारों युगों में बजती चली आई है, sound principle चारों युगों में आज नहीं। बाहर महात्माओं की बाणी काबिले इज़्त है, हीरे जवाहरात से ज्यादा कीमती है मगर कोई सौ साल से, कोई पांच सौ साल से, कोई पंदरह सौ साल से, कोई इस से और पहले। जो नाम या बाणी है न, चारों युगों से बजती चली आई है, वह तो भई चारों युगों में एक जैसी है। बाहर महात्माओं की बाणी तो थोड़े थोड़े अर्से से है। कहते हैं। कहां पर है ?

अंतर जोत निरंतर बाणी साचे साहब स्यों लिव लाई॥

वह तुज़्हारे अंतर में हो रही है, ज्योति से उस का विकास है। फरमा रहे हैं ऐ कानो, उस को सुनो, गुरमुख बच्चे, गुरमुख बन कर ध्यान लगा कर सुनो, चौबीस घंटे कीर्तन होगा। उस के सुनने से रूह जन्मों जन्मों की जो मन इंद्रियों के घाट पर सोई पड़ी है, जाग उठती है। उस अंतर के राग से रूह जाग उठती है मन सो जाता है, इतना भारी फर्क है:-

आप तरे सगले कुल तारे हर दरगाह पत स्यों जाएंदा॥

कहते हैं अगर गुरमुख बन कर तुम उसे ध्यान लगा कर उस कीर्तन को सुनोगे तो आप भी तर जाओगे। और ज़्या फरमाते हैं ? सकले कुल तारे, जितने कुल कुटज़्ब हैं, तर जायेंगे। और उस का नतीजा ज़्या होगा ? मालिक की दरगाह में तुम इज़्त पा

जाओगे बस:-

खंड पताल दीप सब लोआ॥ सब काले बस प्रभ आप किया॥

कहते हैं जितनी creation (सृष्टि) है खंड पाताल स्थूल, सूक्ष्म, कारण जितनी कायनात है कि यह सारी उस मालिक ने बनाई है और काल के हवाले कर दी है। कंट्रोलिंग नियम बना दिया है कि भई तुम इस को चलाओ। सत (ताकत) उसी की (उस प्रभु की) है। वैसे काल पावर ज़्या है और दयाल पावर ज़्या है? सारे महात्माओं ने दो powers का, ताकतों का ज़िक्र किया है। वैसे भी negative और positive कहो, काल और दयाल कहो, रहमान और शैतान कहो, दो पावरों का ज़िक्र किया है मगर दोनों ही ताकत कहां से लेती हैं? सवाल यह है। कबीर साहब ने इस का निर्णय किया है। किसी ने काल और अकाल कह दिया, किसी ने इसी तरह ही याद कर दिया। कहते हैं इस लिए सारी creation (सृष्टि) बना कर काल के, negative power के कंट्रोल में दे दी। मगर आखिर नैगेटिव पावर कहां से आई?

काल अकाल खसम का कीन्हा एह परपंच वधावन॥

यह उस मालिक ने बनाई। जैसे बिजली है कहीं पर आग जला रही है कहीं पर बर्फ जमा रही है, बिजली की सत्या (ताकत) है वह दोनों phases (पहलुओं) में काम कर रही है अरे भई ऐसे ही काल और दयाल है और ज़्या समझे, इस का अपना काम है। वह ज़्या? जब जब धर्म की ग्लानि होती है तब तब मैं अवतार लेता हूं, यह भगवान कृष्ण कह रहे हैं और ज़्या करते हैं, अधर्मियों को दंड देने के लिए, धर्मियों को उभारने के लिए, दुनिया की स्थिति कायम करने के लिए, बाकायदगी में लाने के लिए यह मेरा काम है। संतों का काम postive है। वे दुनिया के काम के इस सिलसिले को छेड़ते नहीं। उस के कानून में ज़रूर रहते हैं मगर उन का काम ज़्या है? वह सुरत को मन इंद्रियों से आज़ाद कर के अपने आप को जान कर प्रभु से जोड़ देते हैं, आने जाने के बंधन से छुड़ा देते हैं दुनिया को गौर आबाद करने यह कह दो।

तो ताकतें दोनों काल और अकाल दोनों ही उस मालिक की बनाई हुई हैं। एक कमांडर इन चीफ है एक वायसराय है। दोनों सत्या (ताकत) कहां से ले रहे हैं? King (बादशाह) से। तो कहते हैं यह सारा बना कर negative power (काल) के कांट्रोल में दे दिया है बाकायदा रखने के लिए। सुपरिंटैंडैंट पुलिस है, हम कुछ ऐसा काम न करें जो कानून के खिलाफ है, हम कह सकते हैं कि सुपरिंटैंडैंट पुलिस नहीं है। कुछ करेंगे तब आयेगा न वह। तो संत महात्मा इन कर्मों से नेह कर्म हो जाते हैं। बाहरी सिलसिला अपना अपना है, अवतार अपना काम कर रहे हैं, उन के लिए भी हमारे दिल में इज़्ज़त है। संत अपना काम कर रहे हैं उन के लिए भी। उन का अपना काम है वह पसे पुश्त एक ही ताकत आधार देने वाली है यह कह दो:-

निहचल एक आप अविनासी सो निहचल जो तिसे ध्याएंदा॥

कहते हैं वह मालिक एक अटल और लाफानी है, कभी न बदलने वाला है, सत है। जो उस के ध्याने वाले हैं वे भी अटल और लाफानी हो जाते हैं बस। हाफ़िज़ साहब ने एक जगह बड़ा अच्छा बयान किया है, फरमाते हैं:-

आवारगी खाना शुदन खाना फरामोश शुदन

कि दर बदरी किस्मत में लिखी गई, रूह भटक रही है न जन्मों जन्मों से और जो असल घर था रूह का, वह हमें भूल गया।

आं गुनदा पीर काबली बस सहर करदर अज़ दगा

उस काबुल के गंदे पीर ने बड़ा जादू हम पर डाल दिया, घर को भूल गये, दरबदरी हमारी किस्मत में लिखी गई। नैगेटिव पावर का ज़िक्र कर रहे हैं। सब महात्माओं ने ज़िक्र किया है, इस एहसास पर आते हैं तो यह कह दो कि दुनिया का

खुदा कोई और है समझे और पसे पुश्त आधार देने वाली ताकत और है। संत महात्मा उस के पुजारी हैं। वह (काल) भी उसी से सत्या (ताकत) ले कर कंट्रोलिंग का काम करता है। अच्छा काम है। आज शहर में गड़बड़ हो जाये तो मिलिट्री के कंट्रोल में, उस के हवाले कर देते हैं न शहर। दो चार दिन में गोलियां बंदूकें चला कर, बाकायदा कर के, जाओ भई सिवल के हवाले कर दो, बात तो यही है। दोनों ही अपनी अपनी जगह काबिले कद्र हैं। उन का (अवतारों का) अपना मिशन है, उन का (संतों का) अपना मिशन है। कहते हैं उस निहचल को जो ध्याने वाले हैं आप देखिए अवतारों के जो पुजारी हैं ज़रा ठंडे दिल से विचारने वाली बात है। जब तक वह अवतार धारण करते रहेंगे वह भी आते जाते रहेंगे। जब वह अवतार लय होंगे वह भी लय हो जायेंगे, इस में कोई शक नहीं असूल की बात है। जो निहचल स्थान के साथ बाहर से हट हटा कर डायरैक्ट (बराहे रास्त) फैसला करने वाले हैं वहां हमेशा के लिए जल्दी फैसला हो जायेगा ।

तो दोनों ही अपनी अपनी जगह काबिले कद्र हैं, उन का अपना काम है, उन का अपना काम है। दोनों की इज़्ज़त अपनी अपनी जगह है मगर उसी एक ही मालिक से सत्या (ताकत) ले रहे हैं दोनों ही। जैसे मैंने मिसाल दी थी बिजली आग भी जला रही है और बर्फ भी जमा रही है, ज़ाहिर ये मुतज़ाद (विरोधी) चीज़ें मालूम हो रही है मगर है एक ही चीज़ जिस के आधार देने वाली एक चीज़ है:-

हर का सेवक सो हर जेहा॥
भेद ने जाणो माणस देहा॥

कहते हैं जो हरि का सेवक है वह हरि का रूप है समझे। कहते हैं जिस्म का भेद मत देखो, जिस्म तो ज़रूर रखता है मगर जिस्म में रहते हुए वह अपने मालिक से अभेद है:-

पिता पूत ऐके रंग लीने॥

पिता और पुत्र एक ही रंग ले लेते हैं:-

पिता पूत रल कीनी सांझ॥

यह गुरु अर्जुन साहब फरमा रहे हैं और यही क्राईस्ट कह रहा है, I and my father are one, मैं और मेरा पिता एक हैं। इस जिस्म में जो आत्मा मन इंद्रियों से आज़ाद हो कर के उस में लय हो गई, उस का mouthpiece (मुख) बन गई, जिस्म तो वैसे ही है, मल मूत्र का थैला वैसे ही लिए फिरते हैं मगर भई जिस्म का अभेद से देखो वह मालिक के इज़हार की जगह है उस से और नहीं। वह पोल है जिस पर इज़हार हो रहा है, स्विच है, पावर हाऊस तो नहीं मगर पावर हाऊस के इज़हार की जगह तो है न। उस स्विच को स्विच न जानो। तो सब के अंतर वह है, यह न कहो किसी के अंतर नहीं है सब के अंतर मगर

सज़्बो घट मेरे साइयां सुंजी सेज न कोए।
बलिहारी तिस घट के जां घट परगट होए॥

बस बात तो इतनी है। अगर उस हकीकत को हम ने जानना है जो लाबयान है, जहां साईंस वाले सिर नीचा कर के बैठे हैं अभी तक, अगर उस को जानना है तो किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में जाओ बस, गुरमुख बनो:-

धुर ज़समे का हुज़्म पया, विण सत्गुर चेतेया ना जाये॥

गुरु अमरदास जी साहब फरमाते हैं कि उस मालिक का हुज़्म है एक fundamental (बुनियादी) असूल बन गया कि जब तक कोई सत स्वरूप हस्ती नहीं मिलेगी मैं नहीं मिल सकता, मैं नहीं जाना जा सकता। इस से खोल कर वह और ज़्या बयान करें ? क्राईस्ट को लोगों ने कहा ज़्या अच्छा हो कि तुम जो हमेशा अपने पिता का ज़िक्र करते हो अगर तुम हम को अपने पिता के दर्शन करा देते। तो कहते हैं he grew indignant over it, थोड़ा जोश में आये। कहते हैं अफसोस मैं इतनी मुद्दत आप के दरमियान रहा और आप यह नहीं जान सके कि मुझ में मेरा पिता बैठ

कर काम कर रहा है। जो कुछ मैंने काम किए हैं उस पिता के आधार पर किए हैं। I and my father are one. एकता महसूस होने लगती है मगर फिर भी एकता महसूस करते हुए भी दम नहीं मारते। नम्रता उन का श्रृंगार रहा है। वह यह नहीं कहता I am God, गो (चाहे) अंतर एहसास होने लगता है महवियत में आकर, कोई बात ऐसी वैसी हो जाये तो अलहदा बात रही मगर तरीका बयान उन का हमेशा third person में रहा है। कबीर साहब आये तो ज़्या कहते हैं:-

कहें कबीर हम धुर घर के भेदी लाये हुज़्म हजूरी॥

कबीर साहब कहते हैं हम धुर घर के भेद को जानने वाले हैं, हम उस मालिक के हुज़्म को दुनिया में सुनाने आये हैं, इशारा तो दे दिया न। वह मालिक वाहदुल्लाशरीक है, कोई उस का सानी (बराबर) नहीं, शरीक नहीं। उस का हुज़्म कौन लायेगा? यही कहोगे न कि उसी की पावर किसी पोल पर बैठी हुई उस का हुज़्म सुना रही है, और ज़्या कहोगे।

जैसे में आवे खसम की बाणी
तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो॥

यह गुरु नानक साहब कह रहे हैं। इस का और ज़्या मतलब है? संतों की कहानी उन की अपनी ज़बानी सुनो तो रंग और नशा आ जाता है। अगर वे न बतलायें तो हमें ज़्या मालूम वे कौन हैं? जब उन के तुम गुरमुज़ बनते हो न, तुम भी उस हकीकत को पा जाओगे, उस का तजरबा होने लगेगा। मनुष्य देह का भेद मत देखो भई, उस पोल में उसी का इज़हार हो रहा है।

नानक दास बुलाया बोले॥

अब आगे फरमाते हैं:-

ज्यों जल तरंग उठे बहु भांति, फिर सलिले सलिल समाएंदा॥

अब महात्मा कुछ यत्न करते हैं समझाने का हर पहलू के लिहाज़ थोड़ी समझ देने के लिए, कहते हैं जैसे दरिया में दरिया की लहर पैदा हो जाती है, लहर एक अलग चीज़ मालूम होती है मगर है दरिया ही। लहर दरिया ही से निकलती है और दरिया ही में लय हो जाती है ऐसे ही अनुभवी पुरुष उसी का इज़हार हैं, उसी में लय हो जाते हैं। कई तरीकों से महात्माओं ने ऋषियों मुनियों ने उस की एकता का ज़्यान किया है। सब ने किसी न किसी तरीके से ज़्यान किया है मगर वह चीज़ है ला ज़्यान, कैसे महसूस होती है? वही जानें जो उस में जाग उठे हैं समझे कइयों ने तो ऐसा बयान किया ऋषियो, ने जैसे लोहे का गोला आग में पड़ कर लोहे का रूप हो जाता है ऐसे आत्मा उस में लय हो कर उस का रंग ले लेती है मगर उस में बुद्धि की तमीज़, ज़्याल रहता है। वह लोहा है, भई लोहा उस का रंग लेता है। अरे भई यह तो एक की एक मिसाल दी है। किसी ने कहा:-

जैसे जल में जल आये खटाना॥
त्यों संग ज्योति जोत मिलाना॥

जैसे जल जल में आकर एक रूप हो जाता है ऐसे ही हमारी ज्योति उस महान ज्योति में मिल कर उस का रूप हो जाती है। यह लफ़्ज़ी बयान है समझाने बुझाने के लिए, वह एकता का ज़्या एहसास होता है यह कोई अनुभवी पुरुष जाने। लफ़्ज़ों की अड़चन में न रहो समझे। दसम गुरु साहब ने बयान किया, जैसे आग जल रही है उस की चिंगारियां उठ रही हैं, चिंगारियां अलग हो कर फिर उसी में समा जाती है। जैसे मिट्टी ज़मीन में समा जाती है ऐसे ही हमारी आत्मा उस में समा जाती है, मिसालें दे कर एकता का एक किस्म का बयान है तरीका बयान है भई। महसूस करने लगता है, इंसान की अपनी हस्ती नाबूद (ज़त्म) हो जाती है, उस में जाग उठता है। अरे भई वह ज़्या रंग आता है, उसे ज़्या बयान कर सकता है? वेदों में और हर एक महात्मा ने कई तरीकों से बयान किया है। उस में एक महाआनंद है निजानंद है, एक सरूर है, एक नशा है। उस को फिर किस तरह बयान किया है माफ करना:-

जैसे कामी काम लुभावै॥
त्यों हर जन हर जस भावै॥

बताओ काम का मुकाबला ज़्या और नाम का मुकाबला ज़्या मगर हमें और कोई तजरबा नहीं। दुनिया का तजरबा है, इस की मिसाल दे कर समझाना चाहते हैं। यह कहां और वह कहां ? चि निसबत खाक रा बा आलमे पाक को समझाने का एक यत्न है। जब महात्मा मिलता है आप को पिंड से ऊपर लाने का तजरबा कराता है, अंतर ज्योति प्रज़्ट करता है। लोग कहते हैं अंतर ज्योति कहां है ? मुझे एक महात्मा ऐसे मिले, कहने लगे अरे भई सूरज ही अंतर देखना है तो बाहर सूरज नहीं चढ़ा हुआ, बाहर देख लो। लोग कहते हैं खंड ब्रह्मंड अंतर में बस रहे हैं। अरे भई आंखों में मिज है, खून है, लहू है और ज़्या है ? अरे भई ऐसे महात्माओं को तो छोड़ दो। तो मेरे कहने का मतलब है कि जो अनुभवी पुरुष है वह आप को पहले तजरबा देगा थोड़ा first hand, जब अपनी आंखों से देखो फिर गुंजाईश ही कहां रह जाती है ? दिनों दिन करो और बढ़ेगा।

इक जाचक मंगे दान द्वारे॥
जां प्रभु भावे तां किरपा धारे॥

कहते हैं हम बच्चे हैं मालिक आप के द्वारे पर एक दान मांगते हैं और वह दान ज़्या है ? कि जो तुम को भा जाये आप अगर कृपा करो तो :-

देहो दरस जित मन तृपताए॥
हर कीर्तन मन ठहराएंदा॥

कहते हैं हे मालिक, हम आप से एक दान मांग रहे हैं, अगर आप दया कर के बज़्श दो तो यह आप के अज़्तियार है हमारे बस की बात तो है नहीं, वह ज़्या है कि अपने दर्शन का दान दे दो:-

गोबिंद मिलण की एह तेरी बरिया॥

प्रभु को पाने का वक्त है। अपना दर्शन हम को दे दो ज़्योंकि आप के दर्शन कब मिलेंगे ? जब मन खड़ा होगा। मन को ठहराने के लिए साथ कीर्तन का दान दे दो। कीर्तन से, प्रणव की ध्वनि से खड़ा हो जाता है, मन के काबू करने का कोई और उपाय नहीं है। बाहरमुखी कितने ही साधन कर लो फिर भी मन हम पर हावी है। उनके विचार से इस को काबू करो, थोड़ी देर के लिए खड़ा होगा फिर भाग जाता है। हठयोग की अनेकों क्रियाएं कर लो, कर कर के फिर मन भागता है बाहर मन के काबू करने का एक ही उपाय है। सब महात्माओं ने बयान किया है, वह ज़्या है कि वह जो प्रणव की ध्वनि अंतर में हो रही है न, नाम की ध्वनि, कीर्तन हो रहा है, उस को सुनने से मन सो जाता है।

मन मूसा पिंगल भया पी पारा हरि नाम॥

हरि नाम का पारा पी कर जैसे चूहा पारा पी कर दौड़ने भागने से हट जाता है इसी तरह हरि नाम का कीर्तन जो हो रहा है उस को पीने से मन हमेशा के लिए खड़ा हो जाता है। तो कहते हैं हे मालिक, हम बच्चे हैं, आप से दान मांग रहे हैं, आप दया कर के अगर बज़्श दो, यही है न, वश की बात तो नहीं है। वह यही है कि हमें अपना दर्शन बज़्शो और मन के ठहराने के लिए कीर्तन बज़्श दो बस:-

रूढो ठाकर किते बस न आवै॥
हर सो किछ करे जो हर के संतां भावै॥

रूढो कहते हैं सुन्दर, अति सुन्दर जो परमात्मा मालिके कुल है, कहते हैं वह कैसे काबू में आ सकता है ? एक बात है जो हरि के संत बन गये, जो अनुभवी पुरुष हैं वे चाहें, वह भी वही चाहता है। वह पोल है न, वह इज़हार की जगह है। गुरु राज़ी तो करता राज़ी, जो संतों को भाता है वही परमात्मा को भाता है। परमात्मा वैसे कैसे काबू में आता है भई। उस को तो हम ने देखा नहीं। कैसे काबू करोगे ? जिस पोल पर वह इज़हार कर रहा है उस की रज़ा रह जाओ। वह खुश होंगे, समझो

परमात्मा खुश हो गया समझे। वह उस के ज़ाहिर होने की जगह है और सब महात्माओं ने यही किया है। मौलाना रूम साहब एक जगह ज़िक्र करते हैं कि संतों महात्माओं में इतनी सत्या (ताकत) है कि आसमान से चले हुए तीर को रास्ते से वापस कर सकते हैं। कहते हैं अब सवाल यह आता है कि वे खुदा के शरीक होते हैं ? कहते हैं नहीं। कहते हैं संतजन उस मालिक के प्यारे पुत्र होते हैं। जो वे कर दें वह (प्रभु) कहता है हां ठीक है। यही पलटू साहब ने कहा कि उस के दरबार के ये (संतजन) मुनीम हैं। यह तरीका बयान का है और कुछ मतलब नहीं। एक पोल जिस पर मालिक इज़हार कर रहा है उस के जैसे उतने सूक्ष्म अगम अभी हम नहीं हुए उस के होने तक, उस तरफ जाने के लिए पिंड से ऊपर आने के लिए, ऐसा पोल जिस पर वह प्रज़्ट हो रहा है उस की सोहबत संगत चाहिए। उस की कुछ याद बनाओ। जो वह चाहता है वही मालिक चाहता है। जब वह राज़ी हो गया समझो परमात्मा राज़ी हो गया।

भई परमात्मा को तो तुम ने देखा नहीं। वह पूर्ण पुरुष हमारी ही तरह मल मूत्र का थैला लिए फिरता है मगर वह मूत्र का थैला नहीं उस में कोई हायर पावर काम कर रही है। वह गुरु है। जो उस को भा गया समझो परमात्ज़ा को भा गया। बात तो इतनी है। मैंने कई बार आगे भी मिसाल दी है कि किसी की एक चीज़ नीचे गिरी हुई उस को चाहिए, मेरे हाथ ने पकड़ कर दे दी उस को अब हाथ तो कोई और है, हाथ मेरे से सिवा नहीं ज़्योंकि हाथ में मैं काम कर रहा हूं। ऐसे ही उन के पोल पर वह मालिक काम कर रहा है। जब वह मिल गया समझो प्रभु मिल गया। मौलाना रूम साहब ने कहा कि अगर तुम किसी वली अल्लाह के नज़दीक आ गये समझो तुम मालिक के नज़दीक आ गये। जब तुम किसी ऐसे वली अल्लाह से दूर हो गये समझो तुम परमात्मा से दूर हो गये। ऐसे महापुरुष के दर्शन, सोहबत और संगत बड़े ऊंचे भाग्य से मिलती है। बट्टा उठाओ तो अनेकों महात्मा मिलेंगे पर ऐसा महात्मा कहीं कहीं मिलेगा, हमेशा ही कमयाब रहे, अब भी कमयाब हैं, आगे भी कमयाब रहेंगे। जब तक ऐसा अनुभवी पुरुष न मिले काम नहीं बनता, मनुष्य जीवन का बरबाद चला जाता है।

कीता लोड़न सोई करायण
दर फेर न कोई पाएंदा॥

कहते हैं जो वह कर दें, करना चाहें कहते हैं वह हो जाता है मलिक उन को रोकता नहीं वे उसके प्यारे पुत्र हैं, शरीक नहीं मगरस्त्र आप के बच्चे हों न कई, एक लड़का बड़ा आज्ञाकार हो, हर एक तरह आप की रज़ा में रहता हो, किसी तरह भी, ज़्याल में भी आप के हुज़्म का उल्लंघन न करता हो, इतना आज्ञाकार, मीठा हुआ तो आप ज़्या करते हैं ? जो अगर उस से कोई बात हो जाये तो आप ज़्या कहते हैं कि ज़्यों किया ? कहते हो अच्छा भई ठीक किया। तो कहते हैं महात्मा उस मालिक के आज्ञाकार पुत्र हैं, प्यारे पुत्र हैं। जो वे कर दें, करना चाहें,, उस को मंजूर है, बस बात तो यह है:-

जित्थे औघट आये बणत है प्राणी॥
तित्थे हरि ध्याइए सारंग पाणी॥

औघट कहते हैं मुश्किल रास्ता, कहते हैं कोई दुनिया में मुश्किलात आ जाती हैं, ऐसी हालत में ज़्या करना चाहिए, उन मुश्किलों का हल ज़्या है ? कहते हैं उस मालिक को प्यार से याद करो:-

जे को मुश्किल अत बणे ढोई कोई न दे॥

लागू होए दुश्मणां साक भी भज्ज खले॥

भज्जे सज़्बो आसरा चूके सब असराओ॥

चित आवे उस पारब्रह्म लगे न तज़ी वाओ॥

कर्मों का चक्र चलता है, यह गौर से सुनिए, उस के काटने का कोई इलाज नहीं। टारे नाहीं टरे। अगर किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में आकर नाम की कमाई

करोगे वह चक्र ढीला और कमज़ोर हो जाता है। उस की, शिष्य की आत्मा बलवान हो जाती है। आत्मा बलवान हो तो सुख दुख आते भी हैं उस को असर नहीं करते, will force (इरादे की शक्ति) मज़बूत हो जाती है समझे। कई चिट्ठियां आती हैं कि महाराज, यह हो गया है। अरे भई कर्मों का चक्र चलता है, रोज़ी नहीं बनी। जैसा बीजना है वैसा काटना है, कोई लाखों पति है, कोई गरीब है, किसी की ज्यादा रोज़ी है, किसी की कम है।

भई छः चीज़ें इंसान के वश की नहीं, अमीरी गरीबी, दुख सुख और ऐश उप ऐश। बेअज़्तियार जैसा किया है वैसा ही आना है न। जितने में हो उतने में संतुष्ट रहो, बाकी पुरुषार्थ करो अपनी तरह से और मालिक की याद करो। वह जो शक्ति उस की है, वह कम हो जायेगी, मुश्किल हल होने के सामान हो जायेंगे, घबराने की ज़रूरत नहीं। तो कहते हैं जब अति औघट मुश्किल रास्ता बन जाये निकलने का कोई रास्ता न नज़र न आये तो कहते हैं कि मालिक को प्यार से याद करो, वह मुश्किल हल होने लगेगी।

जित्थे पुत्र कलज़र न बेली कोई तित्थे हर आप छडाएंदा॥

कि यह वह रास्ता है दुनिया में भी और दुनिया के परे भी जहां पर न बच्चे मदद कर सकते हैं, न स्त्री मदद कर सकती है, न दोस्त मदद कर सकते हैं, न रुपया, न जायदादें, कोई चीज़ आप की मदद नहीं कर सकती वहां पर, तित्थे आप छडाएंदा, हरि वहां साथ छुड़ाने का ज़रिया बन जाता है। जिन्होंने हरि की भूल कर भी याद नहीं की, छुड़ाने वाला कौन है? एक आदमी मरने लगा, बीमारी रही है, अव्वल तो दुनिया में मतलब के जो लोग हैं वे गरीबी में छोड़ जायेंगे, बीमारी में छोड़ जायेंगे। वे कहते हैं मरे, हमारी जान आज़ाद हो जाये। ज़ाहिरदारी से मीठा बनेगा, बीच से भागने की करेगा। अंत समय हद बड़े ही सदाचारी हों तो खड़े के खड़े रहते हैं, रूह सिमटने लगती है, रोता है, घिड़कता है। अब उस वक्त कौन मदद कर सकता है सिवाय नाम के, सिवाय हरि के कौन मददगार हो सकता है? जिन्होंने नाम जपा है या जो नाम के जपने वाले के दायरे में हैं कहो तो उन की तवज्जो बड़ा काम कर जाती है, उस को कोई तकलीफ नहीं। जा कर पूछो बीमारों से जिन को नाम मिला है, जिन के सिर पर समर्थ पुरुष है पूछो कोई तकलीफ है? कहता है कोई नहीं। इस का कारण ज़्या है? अंत समय जब आता है तो गुरु सामने आ खड़ा होता है, नाम की ध्वनि अंतर में जारी हो जाती है, ज्योति प्रज़्ट होती है, उस को दुख काहे का? सुरत उस में जज़्ब होती है, जिस्म का दुख हो भी तो भी उस को प्रतीत नहीं होता है, यह संभाल है।

हमारे हजूर से लोग पूछते थे कि भई नाम की महिमा ज़्या है? तो फरमाया करते थे कि नाम की महिमा देखनी है तो किसी मरते हुए आदमी के सामने जाओ, जिस को नाम मिला हुआ है, देख कर यकीन आयेगा, देखोगे उस को कोई तकलीफ नहीं, आराम से पड़ा है। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह है कि नाम एक बड़ी भारी बरकत है। नाम परिपूर्ण परमात्मा या हरि का नाम ही नाम है और ज़्या है। जिस ने उसको ध्याया उस की दुनिया की मुश्किलें हल हो गईं, अंत समय अच्छा हो गया, हंसते हंसते जायेगा, मर कर भी सुख और आराम पायेगा। जिन्होंने नाम नहीं जपा यहां भी दुखी, मरते भी घिड़कते मरेंगे, फिर बार बार आयेंगे और ज़्या है। हम ज़्या करते हैं?

जो घर छड्डु गंवावणा तिस मन माहिं॥
जित्थे जाय तुध वरतणा तिस की चिंता नाहिं॥

अरे भई जो घर, जिस्म, बाहरी जायदादें तुम ने छोड़ जानी हैं वह तेरा दीन ईमान बना पड़ा है और जहां जा कर तूने वास करना है उस का कोई फिक्र नहीं है। संग सहाई तिस परहरे, फिर, जो चीज़ हमेशा संगी साथी है उस को परे परे करता है, हमें अज़्लमंद कौन कहेगा सोचने की बात है। अरे भई आप सारे दुनिया के काम करो, जिस्म रखते हो इस जिस्म का ज़्याल रखो, यह हरि मंदिर है, इस को पालो।

घट बसे चरणारबिंद रसना जपे गोपाल॥

नानक तिस ही कारणे इस देही को पाल॥

तुज़्हारे घट में उस मालिक के चरण बसें, ज़बान से उस के गुणानुवाद गा सको, इस लिए इस देह को पालो। यह घोड़ा है, इस से काम लेना है। बाल बच्चे हैं उन का फर्ज़ अदा करो ज़्योंकि उन में भी परमात्मा है। अरे भई तुम परमात्मा को याद करते हो और बच्चों से और किसी से नफरत दिल में रखते हो फिर परमात्मा कहां ? सारा जग का काम करो, पोलीटिकल करो, जायज़ करो, अरे भई सब से बड़ा फर्ज़ तुज़्हारा अपने आप की तरफ है, अपने आप को जानो:-

अपने जीव की कुछ दया पालो।
चौरासी गेड़ बचा लो॥

यह स्वामी जी महाराज फरमा रहे हैं। भई अपने आप पर दया करनी सीखो, पहले चौरासी के गेड़े से बचाना ही अपने आप पर दया करना है। हम वे कर्म कर रहे हैं जो बार बार हम को दुनिया में लाने वाले हैं। सारे जहान पर रहम किया और अपने आप पर रहम नहीं किया तो दुनिया में भी दुखी, मर कर भी दुखी, बार बार आयेगा और ज़्या होगा ? Charity begins at home यह मिसाल है। दया दूसरों पर भी करो मगर अपने आप पर तो करो। चौबीस घंटे हैं, दो चार घंटे अपने आप पर रहम करो, भजन सिमरण में बैठो, पिंड से ऊपर आओ, किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठो, इस बात का निर्णय करो। जिस ने यह काम कर लिया उस का मनुष्य जीवन सफल हो गया। जिस ने सारे दुनिया के काम किए मगर यह काम नहीं किया वह रोता आया और रोता चला गया और ज़्या।

वड्डा साहब अगम अथाहा॥ ज़्यों मिलिए प्रभ बेपरवाहा॥

कहते हैं वह मालिक सब से बड़ा है अगम है और अथाह है, बेअंत है। कहते हैं वह कैसे मिल सकता है। वह तो बेपरवाह है उस को हम कैसे पा सकेंगे ? आप ही सवाल कर रहे हैं आप ही जवाब देते हैं:-

काट सिल्क जिस मार्ग पाये सो विच संगत बासा पाएंदा॥

कहते हैं उस की मन इंद्रियों की फांसी काट कर माया की जेवड़ी कहो काट कर, मालिक ज़्या करता है उस को संगत दे देता है। जब आप किसी महापुरुष की संगत में बैठ गये पूर्ण पुरुष की, तुज़्हारा कल्याण हो सकता है। एक वाकेया आया है, हमारी गर्ज़ से गर्ज़ है वह ज़्या है ? कि एक था बनिया, एक गांव में गया, वहां हिसाब करते करते रात को अंधेरा पड़ गया। वापिस जाने लगा, बहियां उठाई हुईं थीं बहुत सी, उठा नहीं सका, देखता है कोई मज़दूर मिल जाये, कोई मिलता नज़र न आये। एक सिख नज़र आया, उस को कहा भई थोड़ी मज़दूरी करोगे ? यह सामान ले चलो ? कहने लगा हां भई मज़दूरी तो करूंगा, ज़्या लोगे भई ? कहता है एक टका। उस ने सोचा बड़ा सस्ता काम है, मगर भई मेरी एक शर्त है। वह ज़्या है ? कि उस प्रभु की कुछ बात करते चलना या मुझ से सुनते जाना। यह शर्त पज़्की रही, फिर मैं एक टका लूंगा। उस ने सोचा भई बड़ा सस्ता सौदा है। आता तो मुझे कुछ नहीं, सुनते ही चलेंगे चलो।

घंटे दो घंटे का रास्ता था, सामान उठाया चले गये। उस के घर पहुंच गये, छोड़ कर वापस आने लगे, उस के साथ ही यह ज़्याल आया कि भई यह (बनिया) ज़्या कहेगा कि किसी की संगत मिली थी। वापस हो कर फिर कहने लगे देख भई तेरी सारी ज़िंदगी में कोई ऐसा कर्म नहीं जिस का तुझे नेक फल मिल सके सिवाय घंटे दो घंटे के जो मेरे साथ सफर किया है, इस का फल तुम को मिलेगा। तेरी मौत आठवें दिन हो जायेगी। वहां जब हिसाब किताब हो, तेरी सारी उम्र में यही एक नेक कर्म है और कुछ भी नहीं। वे तुम से पूछेंगे बताओ इस का फल पहले लेना है या पीछे ? तो उस वक्त तुम ने यह कहना कि इस का फल मुझे पहले दे दो समझे।

खैर ऐसा ही हुआ एक हज़्ते के बाद वह मर गया। धर्मराज के पेश हुआ कि अरे भई तेरा सारा चिट्ठा देखा है, कोई नेक कर्म है नहीं, एक ही है कि दो घंटे फलाने महात्मा के साथ तेरी संगत हुई है, उस का फल पहले लेना है कि पीछे ? वह याद

रही बात महात्मा की कृपा से। कहने लगा महाराज मुझे पहले दे दो। कहने लगा धर्मराज अच्छा भई, साथ में यमदूत भेज दिये।

वह (यमदूत) तो बाहर रहे ज़्योंकि सतलोक या जहां अखंड कीर्तन हो रहा हो वहां पर यमदूत का ज़्या काम है ?

नाम सुणे तां दूरों भागे मत मारे हर जियो बेपरवाहा हे॥

बाहर खड़े हो गये (यमदूत) कि भई दो घंटे तुज़्हारे हैं, जल्दी आना, हम इंतज़ार करते हैं। वह जब अंदर गया तो वही महात्मा वहां भी बैठे थे। महात्मा जिस्म तो रज़ता है मगर वह कई जगह काम करता है। जाकर बैठे, ज़्यों भई आ गये ? कि हां महारज, आ गये। बैठ जाओ। अब ज्यों ज्यों वक्त गुज़रे तो वह बाहर देखे, बाहर खड़े हैं। कहते हैं ज़्या देखते हो ? कि महाराज यमदूत बाहर खड़े हैं, जाना है। कहने लगे बेफिक्र रहो, दो घंटे का फल अब मिला है तो अब का भी फल मिलेगा, बैठे रहो, समझे। किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत का बड़ा भारी फल है, फायदा है। मौलाना रूम साहब ने ज़िक्र किया है:-

हम नशीनी साअते हा औलिया बेहतर अज़ सद साला ताअते बे रया

कि अगर किसी वली अल्लाह के साथ एक घड़ी बैठना नसीब हो जाये तो सौ साल बे रया (निष्काम) भक्ति से भी उस का फल ज्यादा है। एक महात्मा, पूर्ण पुरुष की नज़र पड़ जानी कोई मामूली बात नहीं है भई।

यक निगाहे जां फिज़ायश बस बवद दरकारे मा

हजूर (श्री हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) का मैं आप को एक वाकेया ज़्यान करूंगा जिस महापुरुष के चरणों में मुझे बैठना नसीब हुआ उन की एक छोटी सी मिसाल, कई अनेकों थीं ऐसी ही, एक बार रावलपिंडी गए, ट्रेन में सफर करते थे तो एक मुसलमान गाड़ी से उतरा, स्टेशन पर टिकट खरीदने लगा। यह गाड़ी में बैठे हुए थे। अंगूर ले कर जब मुंह मोड़ा तो देखा सफेद रेशे थे, उन की शज़्ल भी बड़ी attractive (खींचने वाली) थी। जो उन को एक बार देख लेता था उस का जी करता था, देखता रहूं। पास आ गया कि महाराज यह लीजिए, अंगूर पेश किये। कहने लगे अच्छा भई। पहुंच गए मुझे। इतने में गाड़ी ने विसल कर दी। वह भाग कर गाड़ी में सवार हो गया, बस इतने ही दर्शन हुए। नतीजा ज़्या हुआ कि एक वर्ष के बाद उस की मौत आ गई। सटारे का रहने वाला था, वहां बलवंत सिंह एक सत्संगी था। उसको बुला भेजा। वह आया। कहने लगा उस को कि आप के गुरु, मुर्शिद आये हैं। वह कहते हैं साथ ले जाना है। प्यार भरी नज़र भाव सहित उस ने देखा। उन की नज़र पड़ी, अंत समय संभाल का कारण हो गया। बताओ कितनी भारी बरकत है।

तो अनुभवी पुरुष का मिलना दुनिया में कमयाब (मुश्किल) है अगर मिल जाये तो फिर ज़्या कहना। सब वेद शास्त्र ऐसे अनुभवी पुरुष की महिमा गाते रहे, हमेशा ही गाते हैं और गाते रहेंगे। जो गुरुडम बदनाम है वह ज़्यों ? ऐसे पुरुषों के सबब से है जो समर्थ नहीं हैं और ऐज़्टिंग पोज़िंग कर रहे हैं, धोखा और फरेब कर रहे हैं। हिन्दुस्तान में पच्चीस लाख साधु हैं, शायद दो चार दस ऐसे महात्मा मिल जायें मगर यह महिमा जो वेद शास्त्र ग्रंथ पोथियां गाते हैं so called (नाम मात्र) महात्माओं की नहीं:-

तेरा सेवक इक अद्धा होर सगले बयोहारी॥

कि हे मालिक, तेरा सेवक तो कहीं कहीं है, कोई एक आध कहीं कहीं, बाकी सब व्योहार वाले हैं, कोई मठों में फंसा पड़ा है, कोई मान बड़ाई में, इसी में जा रहे हैं। कितने लोग हैं जो मालिक के पुजारी हैं दुनिया में, बहुत कम। भगवान कृष्ण जी ने गीता में ज़्या फरमाया है कि हज़ारों में से एक मेरी तरफ चलता है। ऐसे हजारों चले हुओं में से एक मुझे पहुंचता है, बताओ:-

लाखन मैं कोई है नहीं, कोटन में कोई एक॥

और ऐसे महात्मा जब कभी भी दुनिया में आये हैं सारे जहान को रोशनी दे जाते हैं। वे किसी कौम और समाज के लिए मखसूस नहीं हैं। वे जब भी आते हैं:-

सत्गुर ऐसा जाणिए जो सब से लए मिलाए जीओ॥

जो सब को मिला कर बैठता है उस का प्यार मनुष्य जाति से है, आत्मा देहधारियों से है।

हुकम बूझे सो सेवक कहिए॥ बुरा भलाई दोए समसर सहिए॥

कहते हैं सेवक किस को कहते हैं ? जो हुज़्म को बूझने वाला हो। हुज़्म किस को कहते हैं ? गुरु नानक साहब ने हुज़्म की तारीफ की है:-

हुज़्मी होण आकार, हुज़्म न कहेया जाई॥

कहते हैं वह बयान में नहीं आ सकता। जो काम उस हुज़्म के अंतर चल रहे हैं उन का ज़िक्र करते हैं:-

हुज़्मी उज़ाम नीच, हुज़्मी लिख दुख सुख पाइए॥
इकनां हुज़्मी बखशीश इक हुज़्मी सदा भवाइये॥

फिर कहते हैं निशानी ऐसे हुज़्म के जानने वालों की, फरमाते हैं:-

नानक हुज़्मे जे बुझे तां हौमे कहे न को॥

जो conscious coworker हो जाता है, वह देखता है वह काम कर रहा है, यह उस का (प्रभु का) काम हो रहा है मैं नहीं कर रहा। तो हुज़्म कहते हैं जो उस हुज़्म, को बूझने वाला है conscious coworker बन गया (प्रभु में अभेद हो गया) उसी का नाम सेवक है। फिर उस सेवक की ज़्या तारीफ हुई ? फरमाते हैं:-

गुर के ग्रह सेवक जो रहे॥ गुरु की आज्ञा मन में सहे॥
आपस को कर कुछ न जणावे॥ हर हर नाम रिदै सद ध्यावे॥

मन बेचे सत्गुर के पास॥ तिस सेवक के कारज रास॥

यह सेवक की तारीफ है। बताओ कितने ऐसे सेवक हैं दुनिया में ? तो फरमाते हैं कि वही सेवक है जो हुज़्म के बूझने वाला है। उस को बुरा हो या भला, दोनों ही में संतुष्ट है। उस की आंख खुली है, वह सब के अंतर उस को देखता है।

एक नूर ते सब जग उपजेया कौण भले को मंदे॥

इस में शक नहीं गंदे पानी को कोई नहीं पीता। नाली में अगर गंदा पानी है तो कोई नहीं पसंद करता। हर कोई साफ पानी ही पीता है। उस की (बुरे की) सोहबत से परहेज़ करे। पाप से तो घृणा करेगा मगर पापी से प्यार करेगा, यह उस का लक्षण होगा, नास्तिकों से भी उस का प्यार होगा, समझे। आस्तिकों को तो छोड़ दो ज़्योंकि उस के अंतर आत्मा तो है न, यह अलग बात रही कि उस बेचारे को नहीं पता कि आत्मा का भी कोई और परमात्मा है। असूल तो गलत है नहीं न।

हौमे जाये तो ऐको बूझे सो गुरमुख सहज समाएंदा॥

जब देखता है कि वही ताकत काम कर रही है तो हौमे कहां रहेगी ? उस की निशानी यही है, हुज़्म के बूझने की कि हौमे न रहे। हौमे न रही तो वह देखता है सब के अंतर ही परिपूर्ण काम कर रहा है।

एह विस संसार जो तू देखदा हर का रूप है
हर रूप नदरी आया॥

हरि का रूप नज़र आने लग जाता है। अब भी है मगर हमारी वह आंख बनी नहीं जिस से वह नज़र आता है।

हर के भगत सदा सुखवासी॥ बाल सुभाये अतीत उदासी॥

अब फरमाते हैं जो हरि के भक्त बन गये वे हमेशा सुख में रहते हैं, उन के अंतर शांति है, तृप्ति है, नाम के मुजस्सम जो हुए, नाम के साथ लगने के सबब से।

वे नाम के साथ लगे पड़े हैं, वे हमेशा के सुख को पा चुके हैं, उन की बुरी आदत ज़्या होती है ? कहते हैं बाल सुभाये, बच्चों जैसे हो गये। बाल स्वभाव, बच्चे को किसी से वैर विरोध नहीं। कोई बुरा कह ले फिर हंसने लग जाते हैं। प्यार से कोई बुलाये फौरन आ जाते हैं। कहते हैं बाल स्वभाव हो जाते हैं, किसी से ईर्षा नहीं, सब के हैं। क्राईस्ट ने कहा है Be ye like children ,बच्चे बन जाओ भई ज़्योंकि बच्चे ही उस मालिक की बादशाहत में दाखिल हो सकते हैं। बच्चों से यह मुराद नहीं कि छोटे बच्चे बन जाओ, जो बच्चों के स्वभाव हैं वे तुज़्हारे स्वभाव बनें। बच्चों को देखो कितने मासूम होते हैं ? कोई काम क्रोध कुछ नहीं, बिल्कुल साफगो, साफ दिल। यह हमारी सोहबत संगत से बच्चे ज़राब हो जाते हैं याद रखो। हमारे हजूर फरमाते थे जो बच्चों को नेक बनाना चाहता है वह खुद नेक बने। उन्होंने (बच्चों ने) तो नकल करनी है। अगर तुम मासूम हो बच्चे मासूम रहेंगे। तुम को देख कर वे नकल करते हैं। तो फरमाते हैं बाल सुभाए अतीत, माया से अतीत रहते हैं, माया में रहते हैं मगर माया के अंदर नहीं होते। गुरमुख बाहरों भोला ते अंदरों सियाना, समझे। ऐसे कई दुनिया में रहते हैं, बच्चों के साथ बच्चे बन जाते हैं, बजुर्गों के साथ बजुर्ग की बात करते हैं, अलेप रहते हैं, किसी से ईर्षा नहीं, द्वेष नहीं, कोई बुरा कह जाये तो भी उस को प्यार करते हैं। यह उन का खासा है, यह निशानी दी है बाहरी लक्षण:-

अनिक रंग करे बहु भांति, ज्यों पिता पूत लाडाएंदा॥

अब एक मिसाल देते हैं जैसे पिता हो अपने बच्चे को खिलाता है जैसे वह कहता है कहो रोटी, वह रोटी कहने लग जाता है, जो वह कहता है वैसी ही बातें करने लग जाता है। बच्चा समझता है मेरा साथी आ गया मगर वह पिता, प्यार के अधीन हो कर बच्चा जो तोतली बातें करता है, वह भी तोतली बातें करने लग जाता है इतना प्यार पूर्ण पुरुषों का दुनिया के साथ होता है। सारे ही उन के बच्चे हैं उन के साथ दुखी देख दुखी भी होते हैं, शाबाश भी देते हैं मगर वह अंदर से अतीत हैं यह याद रखो, यह उन का स्वभाव है। दुनिया में उन का कंडज़्ट आफ लाईफ (रहने का ढंग) ऐसा रहता है, पापी हो, कहते हैं भई घबराओ नहीं, हम भी पापी हैं। फिक्र न करो, सब ही पापी हैं। उस का नाम पतितपावन है, ऐसा बचन कहते हैं मगर अंतर से वह पतित नहीं होते। उन की बात भी हम सुनने को तैयार नहीं। एक कहते हैं, आसमानों से गिरा हूं, तो लोग कहेंगे आसमानों से गिरा है यह तो, हमें इस से ज़्या ताल्लुक है ? गुरु अमरदास जी साहब ने कहा:-

हम नीच ते उज़म भये भाई जब ते गुरमत बुद्ध पाई॥

कि हम भी कभी इंद्रियों के घाट पर थे, अब आज उज़म पदवी को पा चुके हैं। अरे भई तुम भी पा सकते हो। जब गुरमत बुद्ध पाई, उन का रवैया, conduct of life दुनिया के साथ ऐसा रहता है। तो Be ye like children बच्चे बनो, बच्चों के स्वभाव को अज़्तियार करो समझे, मासूम बनो। किसी की ईर्षा द्वेष में, काम क्रोध में मत जाओ, बिल्कुल निर्छल रहो। बच्चे निर्छल होते हैं समझे। कोई बनावट, बातें नहीं बना सकते, चतुराई उन में नहीं होती। यह जो सीख जाते हैं यह हमारी मेहरबानी से माफ करना। मैं आप को एक छोटी सी मिसाल अर्ज़ करूं। हमारे घरानों में यह होता था जो बड़े बजुर्ग हैं इस बात की गवाही देंगे, कि हमारे घरों में हमारे भाई बहन पैदा होते थे हम पूछा करते थे, कहां से आ गया यह भई, तो हम को कहा जाता था कि दाई दे गई है। हम मान लेते थे। यह जाले से उतारा है। ऐसी ऐसी बातें कहते थे और हम मान लेते थे। देखिये कितनी मासूम ज़िंदगी थी, कितनी पाकीज़ा (पवित्र) ज़िंदगी थी हमारे माता पिता की। हम को यह कभी ज़्वाबो ज़्याल भी नहीं होता था कि यह बच्चे कहां से आ जाते हैं। और आज बताओ ज़्या हाल है ? हमारे जीवन गिर गये। इस से बचने का केवल एक ही तरीका है। जो आप सब भाई बैठे हो अपने जीवन को नेक पाक बनाओ, तुज़्हारे बच्चे अपने आप नेक पाक बनेंगे, कहने से नहीं, लोगों को उपदेश देते रहो और आप गिरते रहो। जो आप को देखेंगे वही वह करेंगे। आप झूठ बोलोगे वह भी बोलेंगे। बच्चे को कहते हो, कह दो घर पर नहीं है। वह साथ ही आप के साथ झूठ सीख गया कि नहीं ? अपना जीवन गंदा है, उस को

कहता है भई तुम मत करो। वे कहते हैं तुम तो कर रहे हो, हम ज़्यों न करें ? तो बचने का तरीका है। यहां आप सब इतने भाई बैठे हो, आज से आप सब अपना जीवन नेक पाक बना लो। प्यार का जीवन कर लो, निर्छल प्यार भरा जीवन, मीठी ज़बान नम्रता भरी, आप के घर बेहतर हो जायेंगे, बात तो यही है। Charity begins at home. पहले अपना जीवन बनाओ। Wanted reformers, not of others but of the themselves. प्रचारकों की ज़रूरत है भई, बड़ी भारी ज़रूरत है। कैसे प्रचारक हों ? दूसरों को प्रचार देने वाले न हों बल्कि अपने आप को प्रचार देने वाले हों। बेहतरी की यही एक सूरत है, प्रचारकों से माफ करना, दूसरों को लैक्चर सुनाने से तुज़्हारा कल्याण नहीं हो सकता है जब तक वह लैक्चर तुम अपने आप पर धारण न करो। खाली सुनने से कल्याण नहीं, जो सुना है उस को धारण करो। जो ज़ुराक तुम खा कर हज़म करोगे वही तुम को ताकत देगी। खाली सुनने से नहीं, अगर बहुत सुनोगे तो माफ करना, जो गिज़ा हज़म नहीं होगी हैज़ा ही होगा न और ज़्या होगा। हम ज्ञान ध्यान बहुतेरा जानने लग गए माफ करना, और हर एक को बहुतेरा पता है, बताने की ज़रूरत नहीं। जितना पता है उस को धारण करो जीवन में।

युधिष्टर का जीवन आप के सामने है। पांचों पांडव थे, उस्ताद के पास पढ़ रहे थे। महीना दो महीना पढ़े, उस के बाद उस्ताद ने इज़्तिहान लिया हर एक का। किसी ने आधी किताब सुनाई, किसी ने सारी सुनाई। जब युधिष्टर की बारी आई कहने लगे महाराज मुझे सच बोलना याद हो गया, क्रोध मत करो थोड़ा थोड़ा याद हुआ है। बड़ा गुस्सा आया उस्ताद को, डर था बादशाह ज़्या कहेगा ? डेढ़ दो महीने उस के पास बस यही कुछ पढ़ा है ? दी चपेड़ पर चपेड़, मारने लगा उस को, वह चुपचाप खड़ा रहा, दो चार दस बार जो कहा, फिर दिल में ज़्याल आया कि भई यह तो बोलता नहीं। बादशाह कहेगा बच्चे मेरे को मार दिया। पूछने लगे ज़्यों नहीं बोलता ? महाराज मैंने कहा था कि मुझे सच बोलना आ गया, क्रोध मत करो, थोड़ा याद हुआ। सच्ची बात तो यही है कि आप मार रहे थे तो थोड़ा सा क्रोध मुझे आ गया था। भई जो जीवन में धारण करोगे वह आप के जीवन को पलटा देगा। ज्ञान ध्यान ज़बानी से दिमाग को merchandise (व्यापारिक चीज़ों) से भर लोगे उस से कल्याण नहीं होगा, यह सोलह आने सही है। हां जितना उस में से digest (हज़म) कर के अपने जीवन का हिस्सा बना लोगे वह तुम को सुख देगा।

अगम अगोचर कीमत नहीं पाई॥ तां मिलिए जां लए मिलाई॥

कहते हैं वह मालिक अगम है, अगोचर है, इंद्रियों से अतीत है। हम उस की कीमत कैसे जान सकते हैं ? जो मन धन से परे है उस की ज़्या कीमत थापोगे। आप बताओ:-

तूं बेअंत हौं मित कर वरणूं
ज़्या जानूं होए कैसो रे॥

तुम तो बेअंत हो, तुज़्हें finite terms में, मित कर के ज़्यान कर रहे हैं। हमें ज़्या मालूम आप ज़्या हो ?

एवड ऊचा होवे को, तिस ऊचे को जाणे सो॥

जितना वह ऊंचा है, अति सूक्ष्म और अगम उतने ही हम भी अगर होंगे तब ही उस को देखने के काबिल होंगे। जब तक उस स्थान को नहीं पाया, तो हमारा उस को पाने का रास्ता ज़्या है ? जिन्होंने पाया है उन की सोहबत अज़्तियार करो बस। वह एक है या दो है, एक कहना भी माफ करना यह भी उस सुलतान को मियां कहना है समझे। हौं मित कर वरणूं। हम finite terms में ज़्यान कर रहे हैं। वह एक है बतलाने के लिए कि source (स्रोत) जहां से सब चीज़ें आई हैं वह एक ही है। कबीर साहब कहते हैं:-

एक कहूं तो है नहीं दो कहूं तो गार।
जैसा है तैसा रहे कहे कबीर विचार॥

एक कहूं तो दो का सवाल पैदा हो गया कि नहीं ? Finite terms में आ गया न

मापने में आ गये। जहां एक का सवाल है वहां दो का है। कहते हैं दो कहूं तो गाली निकालने के बराबर है। कहते हैं अपने आप में वह कायम बिलज़ात हस्ती है, जैसी है वह, ज़्यान में नहीं आ सकती है। हां संतों, महात्माओं, ऋषियों, मुनियों ने उस को ज़्यान करने का यत्न किया है हम को समझाने बुझाने का, दुनिया की मिसालें दे दे कर खोल खोल कर ज़्यान किया है कि किसी तरह हमारे दिल में वह बैठे मगर फिर भी वह बुद्धि से परे है। जब तक हम मन इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते हमारी बुद्धि स्थिर नहीं होती हमें अपने आप का अनुभव नहीं होगा, प्रभु का अनुभव नहीं होगा, समझे। इल्म आमिल के गले में फूलों का हार है, ऐसा आमिल पुरुष आप को एक चीज़ खोल खोल कर पेश करेगा कई तरीकों से मगर इल्म खाली हो, अमल न हो, अनुभव, तो सारा एक गधे का बोझ है जो उस के सिर पर लदा हुआ है। आमिल के साथ इल्म जो है यह फूलों का हार है। अमल के बगैर जो इल्म है एक गर्दन पर बोझ है, न अपनी गुंझल (घुंडी) खुली न दूसरों की खोल सकेगा समझे।

गुरमुख परगट भया तिन जन को
जिन धुर मस्तक लेख लिखाएंदा॥

कहते हैं वह मालिक किसी को प्रज़्ट भी हो सकता है ? कहते हैं, कुछ लोग। किस को ? जिस को धुर मालिक आप दया करे। यही वशिष्ट जी महाराज ने राम चंद्र जी को कहा कि जब तक आत्म देव कृपा न करे जीव उस को नहीं पा सकता। राम चंद्र जी ने कहा कि भगवन, फिर जब वह कृपा करेगा, दया करेगा तब देखी जायेगी। कहने लगे नहीं राम, हमारा काम इंद्रियों को दमन कर के उस के दर पर झोली फैला कर बैठना है। यह हमारा काम है, देना उस का काम रहा। जहां आग जलती है आज़्सीजन मदद को आती है। अरे भई हमारे अंतर में उस मालिक के मिलने की तड़प हो वह मालिक सामान करता है कोई न कोई। वह ज़्या ? किसी मिले हुए को मिला देता है और ज़्या:-

तू आपे करता कारण करणा॥
सृष्ट उपाए धरी सब धरणा॥

फरमाते हैं हे मालिक, तू करता है हर एक कारण का भी कारण, इल्लत और मालूम का भी background (पसे पुश्त आधार) है, काज़ और इफैज़्ट दोनों की बैक ग्राउंड है। ऐसी हालत में तू आपे कर्ता कारण करणा। सृष्ट उपाई धरी सब धरणा, सारी सृष्टि उपा कर के स्थिति को कायम किया हुआ है, बाकायदगी से चल रही है। हमारे कानूनों में तो त्रुटि (खामी) हो जाती है, कुदरत के कानूनों में कोई त्रुटि नहीं। हर एक चीज़ बाकायदगी से चल रही है Nature's laws are unchangeable कुदरत के कानून ला तबदील (अटल) हैं। हज़ारों लाज़ों करोड़ों बेअंत सालों से चल रहा है एक ही सिलसिला, उस में कोई तबदीली नहीं हुई है। मालिक तेरे हुज़्म के अंतर यह सब कुछ स्थापित है, चल रहा है।

जन नानक सरण पेया हर द्वारे हर भावे लाज रखाएंदा॥

कहते हैं आखिर हार कर हे मालिक, हम आप के दर आ पड़े हैं, आप को अगर भा जाये तो आप हमारी लाज रख लो, हार कर आप के चरणों में हम आ गये हैं, आप दया कर के हमारी पत को रख लो। बात तो यह है:-

हार परे स्वामी के द्वारे, दीजे बुद्ध विवेका॥

बस जैसे मैदाने जंग में अर्जुन ने तीर और तरकश भगवान कृष्ण जी के आगे रख दिये थे कि महाराज जो हुज़्म होगा मैं कर दूंगा ऐसे ही अज़्ल और फिक्र के सब तीर तरकश उन के हवाले कर दो कि हे मालिक, जो रज़ा हो आप, मालिक तो देखा नहीं, मालिक जिस पोल पर (जिस्म इंसानी) पर प्रज़्ट है न, उस का हुज़्म भी उस मालिक के साथ मिला जुला हुआ है। गुरु की रज़ा जो है वह मालिक की will (मर्ज़ी) में अभेद है, अगर तुम गुरु की विल में अभेद हो जाओ, आज्ञाकार बनो वह मालिक की आज्ञा है।

फिर मैं अर्ज़ करूं कि गुरु जिस्म रखता है मगर वह (गुरु) वह पावर है जो

उस पोल पर काम कर रही है वह गुरु है समझे। जब तक यह उस को पहचानता नहीं इंसान बेखौफ नहीं होता, बात तो यह है। तो यह गुरु अर्जुन साहब का शज़्द था जो आपके सामने रखा गया। गौर से देखिए कि हर एक महात्मा, यह नहीं कि वह अपने गुरु की महिमा गाते हैं, गुरु के साथ प्रभु की महिमा है, गुरु प्रभु की महिमा गाता है। अब गुरु परमात्मा से जुड़ा है और लोगों को प्रभु के साथ जोड़ने का एक ज़रिया, मददगार चाहिए means to end वह कौन हो सकता है ? जिस ने खुद पाया है वही तुम को मदद दे सकेगा और ज़्या। बात ज़्या है ? वह कहता है अरे भई मैं तुज़्हारे जैसा इंसान हूं, जब बहुत दुनिया ऊंचा पुकार करने लगती है न, गुरु साहब आये। महात्मा जब कभी भी आये, नम्रता का श्रृंगार रहे:-

नानक नीच कहे विचार॥

और

नानक गरीब ढै पेया द्वारे

यहां तक कह दिया कि

भौंका इस तन ताईं

अरे भई मैं इस जिस्म में भौंक रहा हूं। बताओ ऐसे महापुरुष अपने लिए जब यह लज़्ज़ बरतें तो हम को ज़्या लज़्ज़ बरतना चाहिए। आप बताइये। तो नम्रता उन का श्रृंगार होता है मेरे अर्ज़ करने का मतलब है। तो एक जगह यहां तक ज़्यान किया है, यह महात्मा कहते हैं कि भई हमारी कोई हस्ती नहीं है, वह प्रभु ही सब कुछ काम करने वाला है। अब जिन्होंने इस को पाना है कुदरती बात है कि उन की इज़्जत उन के दिल में कुदरती बनेगी। वह ज़रिया बन जाते हैं और ज़्या है:-

मेरे हर प्रीतम की कोई बात सुणावे सो भाई सो मेरा बीर॥

जो हरि के पाने की कोई बात को सुनाये, कहते हैं वही सच्चा मेरा भाई है, वही मित्र है।

कोई आण मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा
हौं तिस पे आप वेचाई॥

कि मैं अपने आप को बैखरीद करूंगा भई कोई मेरे को मिलाए सही। कहते हैं किस लिए:-

हौं हर दर्शन देखण के ताईं॥

हरि के दर्शनों के देखने के लिए जिस्म बै करना पड़े तो मैं करूंगा, मुझे मिला दे समझे, कोई मिला दे बस।

यहां पाठी ने यह भजन गाया

मुझे राम से कोई मिला दे।
बिन लाठी का निकला अंधा,
राह पा कोई लगा दे, मुझे राम से. . . .
कोई कहे वह बसे अवध में
कोई कहे तीरथ मंदिर में
कोई कहे मिलते बन में
देख सकूं मैं अपने मन में
ऐसी जोत जगा दे, मुझे राम से. . . .

****